सूरज री मौत

अन्नाराम सुदामा

गांधी चौक री अगूणी गळी रै नुक्कड़ पर पैली हवेली सेठ शिवदयाल री है। गुंभारियां पर उठायोड़ी लाल भाठै री तिमंजली हवेली आवतै–जावतै रो ध्यान आप कांनी मतैई खींचै। पगोथिया चढ़तां ई जीवणै हाथ नै अेक बडो कमरो हो जिकै रै फर्श पर सगळै बिलान–बिलान ऊंचो गिद्दो, बीं पर धोळीधप सजनी, सजनी पर बिसाई ऊजळाबग्घ गोळ अर लम्बा–चौरस पांच–सात तकिया हरदम पड़्या दीसै। औ कमरो दीवानखानो बाजै।

जेठ रो महीनो। दिन री बारै–सवा बारै हुई हुसी, सेठ तांगै सूं उतर आपरै दीवानखानै में बड़्यो। मलमल रो चोळो अर मरसराईज री गिंजी पसेवै सूं आलागार अर लिलाड़ सूं चालता रींगा डोळां ढळता नीचै पड़ै हा। चोळो बण झट खूंटी पर टांग दियो अर कर पंखै रो खटको नीचो, ईंनै देख्यों न बींनै, पसरतो ई हुयो गिद्दै पर। पेट तिड़ै हो, नाळ भरी ही गळै तांई, पड़तां ई बो हाथ पेट पर फेरण लागग्यो।

सेठ बरस चाळीसेक रो हुवैलो। मोटो पेट, जाडी साथळां, ओछी पींड्यां, भारी बूकिया अर रंग रो टेलीफून। जूण में मिनख, रंग अर आहार–पाणी में पाडै रा लच्छण, पर लिछमी री महर। आछी खुरचण। पसरतै ई नौकर नै हेलो मारयो – राजाराम, अे राजाराम !

–हां बाबू ! अर ई रै लारोलार मिंट–भर ई नहीं हुयो राजाराम सांम्हो आय ऊभो।

–बाल्टी लाकर थोड़ा टाटा छिड़को तो, और बहूजी को भी बोल देवो कि थोड़ा खाटा–सुपारी निकाळ देवै।

मिंट आठ–दसेक में टाटा छिड़क'र नौकर जावण लाग्यो इत्तै में बीन पगलिया करती सेठाणी ई आ ऊभी। –बोलो, कांई चाइजै ? उण पूछ्यो – पैलां तो सिरका सुपारीदान इंनै, अर फेर लगा तेज चूनै रा दो पान अकरा देख र। उण अलमारी खोल र सुपारीदान बीं आगै सिरका दियो अर फेर पान लगावण बैठगी।

Scanned by CamScanner

सेठ पसवाड़ो फोर र सुपारीदान साम्हो कर लियो। भिड़तां ई उण पंदरै–बीसेक नींबू रस री गोळ्यां बाकै में घाल ली, फेर पचायोड़ी पींपळ्यां, अदरख अर खारक, साग–फलका जीमै ज्यूं चिगळन लागग्यो। पचायोड़ै जीरै अर गुळकंद रै खाटै रो स्वाद बिच–बिच में न्यारो ई लेवतो। सुपारीदान में छव–सात खण भरया हा। सगळां में लप–लप जिनसां मजै में हुसी। दस–बारै मिंट में सेरड़ै केई खण आधा कर दिया अर केयां नै पूंछ र बारा तळा ई काढ दिया। ईनै सेठाणी बिचारी आपरी जाण में तो फुर्ती घणी ई करी पण नहीं–नहीं करतां ई कीं टैम तो लागै ई। मिंट दसेक री ढील जे बा और कर देवती तो बाकी खणा में ई लाधतौ ठाकुरजी रो नांव अर बचतो खाली सुपारीदान ई। पान सेठाणी झला दिया। फेर पूछ्यो – कांई जीमणवार ही आज भायलां रै ?

पेट पर हाथ फेरतो सेठ बोल्यो – जीमणवार तो ठीक ही। बिदामां री कतली अर राजभोग पण टैम गरमी री ही नीं, ईं खातर अै चलै कम हा।

–रायतो नीं हो ?

–दही बड़ा हा किसमिस दियोड़ा, बड़ा स्वाद। घणकरा लोग तो बांनै ई बांनै चेपै हा।

–लोगां री छोडो, थे थांरी बतावो नीं।

–मूंढो साफ करण नै अेक–आधो चाख्यो जिकै रो तो दोस लाग्या मत ना, बाकी म्हैं पेट में फूस भेळो करूं, म्हारी अकल भांग खायोड़ी ही ? बड़ा पाणी कित्तो मांगै, तनै ठा है ? तिस ओ अबार इयां ई सांस नीं खावण दै, जाण र ताव ने तेड़ो क्यों ?

–अबै पेट पर हाथ फेरो अर टसको तो इत्तो पैलां खावो ई बाळन नै ?

–तूं जाणै है, भाणै पर बैठां पछै कीं तण र खाणो ई पड़ै। छव–सात जणा हा बराबरिया। नई–नई करतां च्यार धामा कतली अर डौढ–दो धामा राजभोग तो उठ ई ग्या, डौढ–दो धामा कीं मनवार रा ई लेणा पड़्या। नटीजै कियां ?

–इत्तो–इत्तो मीठो तो पैलां ई ले लियो अर मनवार बळी भळै बाकी ई रही। इयां अगलै पछै सगळो समान कांई थांरै खातर ई कियो हो ?

–म्हां खातर क्यों, सगळा ई जीमो। कोई कींरो ई हाथ थोड़ो ई पकड़ै हो करै जिका सै आपरी शोभा नै करै है, मनवार अेढै–मेढै नईं तो फेर किसै दिन, भाई–परसंगी रो हाथ पाछो थोड़ो ई करीजै कदैई ? अर ओजूं इत्तै सूं ई किसो सरग्यो, सिंझ्या दुकाव में भळै किसो जाणो नीं पड़सी, बठै हाथ बांध र थोड़ो ई बैठीजसी ?

– अबै तो म्हैं देखूं जाय र फौड़ा–सा ई देखणा है। पेट में खाली जागा तो सायत आध आंगळ ई नीं लाधै।

–ईरो तनै कांई ठा ? हां, बित्तो तो खैर नीं भावै पण खाणै पर बैठ र

कीं–न–कीं जाड़ नीं हिलायां लोग टक्का नीं गिणलै ?

–काल नै कींनै ई जे भोरो ई नीं भावै तो कोई धिंगाणो है ?

–धिंगाणो नीं तो कींरै ई सागै क्यों बैठै, लुक र बैठो अंधारै में कठैई।

–आंतां रोसीजै अर जी दुख पावै जिकै सूं तो लुकर बैठणो ई आछो।

–थारा ओजूं मढ में बैठी रा ही मटरका कियोड़ा है। भाई–परसंग्यां में बारै नीसरयां ठा पड़ै। न्यारो बैठ्यां लोग बूकिया झाल र ठरड़ लावै। न्यारो बैठूं कांई न्यात बार हूँ ?

–तो फेर जावो ई क्यों ? इसो कांई अणसरयो जावै है बिना गयां ?

–नईं गयां म्हारै कुण काकोजी आसी ? मीठी कांई लोगां रो देख्योड़ो नीं हुवै ? कह र आधी मिंट अेकर बो चुप हुयग्यो। फेर बोल्यो – दो–तीनेक संतरा सुधार र भेजै नीं, पेट की ठंडो हुवै तो ?

–अर आलूबखारा ?

–बै ई भेज दै दो–च्यार। पाचक हुवै है।

–थोड़ो बील रो सरबत कर दूं, आछो रैसी पेट नैं

–करदै थारै जचगी तो।

पांच–सात मिट में सै हाजर कर दिया सेठाणी । सेठ खा–पी र थोड़ी आड–टेढ करै ई हो इत्तै में अेक भायलो आयग्यो। बीं खातर कीं जळपान मंगायो – थोड़ो मीठो, अेक लंगड़ो अर कीं लखोट, थोड़ी चबीणी अर कीं चरका काजू। दो कवा सागै आपनै ई लेणा पड़्या। लारै जावतां अेक शीशी कोकाकोला और। बींनै देवै जद आप लारै कियां रैवै ? सुपारीदान भळै मंगा लियो। खण दबा–दबा र दूसर भरया है सगळा। भायलै तो बिचारै रीतसर ई लिया पण भाईड़ै तो भळै ई कीं भारी हाथ ई मारया। स्वाद स्पीड पकड़्यां पछै कींरै सारै ? मूंढो पाछो ई पान सूं भर लियो। ताश पर जमग्या। ताश ई सूकी नईं, गीली। ताश घंटा–अेक मसां खेली हुसी पण हार–जीत इत्तै में ई दो पत्ती री करली अर इत्तै में ई तेड़ो आयग्यो – जल्दी संभो–सा, दुकाव खातर।

नहा–धो पाघ रा पेच संवार अर बण फीटाफीट, बजी सातेक सेठ दुकाव में तैयार।

शहर री अेक सांकड़ी गळी में, अेक आंधै–सै ओरियै में अेक बेवा पींजारी बरस पचास–पिचपनेक री अर बींरो वेटो हुसैनियो बरस तेरह–चवदैक रो बसै। ऊमर सूं तो बा इसी डोकरी नीं हुई, पण रोग, भूख अर अणगिण चिंतावां बींनै बेरहमी सूं कूट–कूट बींरा जीवणपान झड़का वींनै अकाळ में ई ढंखर कर दी। धांसी आवै अर लोही शरीर में खासो भूलो सूकग्यो। चामड़ी चुस र पींजरै रै चिपगी। लूखो–पाको साम्हो आवै जिसो पेट में नांखलै, नईं तो अल्ला–अल्ला खैर सल्ला, बैठी माख्यां उडावै अर मौत नै उडीकै।

Scanned by CamScanner

छोरो कींरै ई पचास–साठ पइसां मण लकड़ी फाड़ आवै, कींरै ई दो–च्यार कूंडा बेकळू नांख दै। हाथ आवै तो कूंडो–कड़ाई री का और कोई छुटकर कौर–मजूरी करलै। पूरो–अधूरो पेट जिसो भरीजै बियां ई ठीक है। कदै–कणास साव निरणै काळजै ई संतोष करणो पड़ै। अबार ऊनाळो है। माड़ी–माठी कोई रूई भरावतो हुवै बो ई नहीं भरावै, हां सीयाळै में नईं–नईं करता पेट की ढंगसर भरीजै, पण डोकरी की कळाप सागै करै जद। बीं बिचारी नै आवै दम दोरो, तो पींजण सोरो कियां चालै, तो ई मौत सूं जूझ र काया नै भाड़ो देवण हाथ–पग कीं चलावै बापड़ी।

काल हुसैनियो बजी च्यारेक चाळीस पइसां रा सवा सौ ग्राम डंकोळी भुजिया लेय र घर में बड़्यो अर मां–बेटै बां भुजियां में ई रात काढी। डोकरी भुजियां रा दस–बीस टुकड़ा मसळ र कीं अधचिगळ्या कर पेट नै भाड़ो दियो अर खटोलड़ी पर गोडा भेळा कर पड़गी। दिन–भर रो थक्योड़ो छोरो ई लप भुजियां पर लोटो पाणी नांख, मां कनै ई अेक बोरी बिछाय र आडो हुयग्यो बीं पर।

आज च्यार बजगी दिन री। ओजूं ई फिरै है, ताळमेळ कठैई नीं बैठी। झिगदर दोवटी रो मैलो–सी चोळियो, कास्यां लाग्यो खाखी जांधियो, लूखा अर मैल सूं करड़ा, ओछा ऊभा केस, हाथ में टाट रो अेक थेलियो, बींमै तीन–च्यार टांकी अर अेक हथोड़ो घाल्यां बो हेला मारतो फिरै–कोई लकड़ी फड़ावो तो, कोई लकड़ी....। पण ओजूं कोई नीं टकरयो। दिनूगै अेक कंदोई सूं भेटा हुयग्या हा। लक्कड़ तीस कीलै सूं कम नहीं हो। बात आठाना मण में तय हुई ही। लकड़ी कर र जद बो छेड़ै हुयो तो हलवाई बींनै पन्द्रह पइसा झलावण लाग्यो। छोरो बोल्यो–इत्ता ई कियां देवो हो ? घंटो भर लागग्यो म्हनै, देखो फाला हुयग्या हाथां रै।

–इसो अमीर हो तो घरै ई क्यों रह्यो नीं ? लकड़ी फाड़सी बींरै तो फाला ई हुसी।

–तो लक्कड़ कांई बारै–तेरै कीलो रो ई हुतो ?

–तो हो ऊंठ–दो ऊंठ रो ? लेवै तो लै, नीं तो औ रस्तो पड़्यो पार बोल। छोरो मूं लटकायां हो जियां ई खड़ो रह्यो। पसीनै रा टोपा रह–रह डोळां सूं पड़ता चोळै पर चुसै हा, खड़ो–खड़ो बो अेकटक बीं कानी देखै हो।

मिंट दो–अेक बाद हलवाई पांच–पइसा और भेळ, की चिंड़ र बोल्यो – लै बळ आगड़ो ई! भळै म्हारी दुकान कानी मूंढो कर लियो तो तूं थारी जाणै है।

–सफा ई इयां कांई करो हो, च्यारानी तो पूरी करो।

बो लाल–पीळो हुय र बोल्यो– हां, आकां रै लागै है पइसा। च्यारानी रो मनकास्योड़ो, लेवै तो लै, नीं तो पड़ कुवै में – कर दै शिकायत करै जठै।

छोरै, ईनै–बीनै निजर पसारी, कोई सहारो देवै तो पण भैंस भैंस री सग्गी,

दिगंब्रां री बस्ती में गाभैवाळो कठै ? बठै तो पांच–सात हलवाई ई हा कनै–कनै। उण सोच्यो – थारी पांच–पइसां री पंचायती में किसो स्याणो पड़सी अर काल भळै आणो ईंनै। मन मार, मिल्या बै ई लेय र टुरग्यो पण अबै बींरी भळै फिरण री सरधा कम ही। कीं हो रात रो भूखो, अर कीं ही तिड़की अकरी। बीस पइसां रो कांई लेवूं ? सोचै हो का सामनै अेक खूमचैवाळो दीखग्यो। छोटी–छोटी दो कचोळी बै ई बासी अर खांडी–खोरी, लेय र टुरग्यो – मां अर आप खातर। बींसूं जी सोरै रो अेक गब्बो ई नीं हुयो बींरो। पड़ग्यो पाणी पी र। मां बोली – लाडेसर आं सूं किसो पेट भरीज्यो आपणो ? आटो जे पाव ई लावतो तो कीं आधार ई आवतो अर गुटको पाणी ई भांवतो ।

–सिंझ्या लासूं मां। अबार तो बीस ई पइसा हाथ आया।

–लायै भाई, आज दो दिन हुयग्या, भुजिया–कचोळ्यां सूं न तो भूख ईं बुझी अर न जी सोरो ई हुयो।

बो कीं नीं बोल्यो। बोरी पर आडो हुयग्यो। फिरतो–फिरतो थक्योड़ी तो हो ई, आंख लागगी। सिंझ्या च्यारेक बजी भळै निकळ्यो। अेक भट्टी री राख काढी बण, दस पइसा मिल्या, लेय र बो आगै निकळग्यो नुंवी टोह में, पण छव बजी तांई किणी बींरै सांम्हो ई नीं देख्यो। मन में तो उण धार राखी ही कै आज दो–च्यार रोटी रो आटो जरूर ले जाणो है। जे दस–पांच पइसा ऊबरग्या तो च्यार आलू ई ले लेसूं, उबाळ र दो कांकरा लूण रा नाख, चरकै पाणी सागै रोटी चपो लेसां। मां ई रोटी कीं सावळ चिगळ लेसी, सोचतो ईंनै–बींनै आंख्यां फाड़ै हो, पण दिन–भर रो थक्योड़ो सूरज ज्यूं–ज्यूं आथूणी दिस ढळै हो बियां–बियां बींरै काळजै निरास अंधकार गाढीजै हो। बो उठ्यो, कनली पौ में अेक लोटो पाणी पियो। मरतै नै भावै तो क्यांरो हो, तो ई पी लियो। पेट में डीक बंधगी। सोच्यो – अेकर दस पइसां रा खुणच–खंड चिणा लेय र खासूं, आंख्यां आडा तिरवाळा आवै है, पग ई पूरा साचा नीं पड़ै। जे लकड़ी फाड़नी पड़ी कठैई तो ताबै आणी ई मुश्किल है। चिणा लेवण नै उठ्यो तो अेक सवाल भूत बण र बीं री आंख्यां आगै आ खड़ो हुयग्यो कै कीं और पइसा पल्लै नीं पड़्या अर आंरा खा लिया चिणा तो मां खातर कांई ले जासी ? दो दिनां सूं बा ई भुखी–सी है। आटै रो कह्यो हो उण पण ईं हिसाब पटड़ी बैठणी मुश्किल लागी। तीस पइसा आ हुवै जद हुवै मनचींती। मन भारी हुयग्यो। चिणा लेवण रो विचार उर्ण टाळ दियो। बो आगीनै टुरग्यो। पांवडा दसेक राख्या हुसी का गैरू री हांड्यां रो ठेकैदार यासीन मिलग्यो। बोल्यो – छोरा, ब्याह में अेक जागा गैस री अेक हांडी लेय र चालणो है, बोल ?

–चालसूं परो। कांई देसो ?

–देसूं कांई हाथी–घोड़ा, आठानी अेक है, बा ई सूकी।

–छोड कद–सीक देसो ?

–सवा–डौढ़ घंटो तो लागै ई लो।

–तो चालो। अर बो बींरै लारै टुरग्यो

आठ–दसेक लुगायां, दो–तीन आदमी गैस री हांड्यां लियां जान रै आगै–आगै चालै हा, बां में अेक हुसैनियो ई हो। हांडी उण माथै पर पूर री अेक ईंढूणी धर, बीं पर मेल राखी ही। होळै–होळै बड़ी सावधानीयाँ सूं चालै हो।

बीन री घोड़ी आगै पांच–सात डूमां रा छोरा चालै हा। अेक जणै बांमें जनाना वेस कर राख्यो हो, लैंघै–लिपस्टिक सूं लेय र हाथ में रूमाल तांई। बै दस –बीस पांवड़ा पर, ठैर–ठैर बीन आगै नाचता–गावता हा – उड–उड म्हारा काळा रे कागला.....। अर कदैई – खड़ी नीम के नीचै मैं तो अेकली, जातोड़ै बटाऊ म्हानै छांनै–छांनै देखली, जिसा सस्ता अर डूमाउ गीत। हुवण नै तो बैंड बाजो ई हो, पण घणकरै जान्यां रो झुकाव आं छोरां कानी ई हो, बीं जाननियै छोरै कानी विशेष। जानी होडा–होड अेक–अेक, दो–दो रा लोट बीं छोरै पर औसरै हा; सौ –सवासौ तो बै हुवैई ला। देवणियां में सेठ शिवदयाल अगली पांत में हो। बींरी मलमली जेब कड़कड़ै लोटां सूं खासी ऊंची आयोड़ी ही। जान ज्यूं–ज्यूं आगै बधै ही, खंख अर सैंट री सुगंध ई बींरो सागो करै ही, बिना नूंतै ई।

अंधेरो पड़ग्यो हो तो ई सड़क ओजूं खासी ताती ही। हुसैनियो पगां उबाणो होळै–होळै चालै तो हो पण चालण में लूण–लक्खण कीं हो नीं। पग कीं डिगै हा, नस दूखै ही, शरीर की बिसांई मांगै हो। जान टुरी नै अध घंटा सूं ऊपर हुयगी। ओजूं तो आधींटो ई नीं आयो तो ई मनेग्यानै बो हो सावळचेत कै आवैनी हांडी कठैई पड़ र फूटगी तो सोनै सूं ई घड़ावणी मूंघी पड़ैली। गिणगिण पग मेलतां छेकड़ उण ब्याह वाळै घर तांई नाको कियां ई पा'दियो।

जान्यां नै पैला तो मैंगोसेक भावै जित्तो। तीन–तीन च्यार–च्यार गिलास तो हर अेक ई खाली करी। सेठ शिवदयाल मनवार रो कीं घणो काचो हो, उण नईं–नईं करतां सात नै तो हाथ बता ई दियो। मैंगोसेक पछै प्लेटां री बारी आई। कतली, राजभोग, संदेस अर समोसा। डब्बल अर तिब्बल तो घणकरा ई खाली करी पण सेठ अर वींरा भायलां डब्बल सूं ई अेक–अेक आगै बधग्या। लारै जावतां पान, सुपारी, खाटो हुवै ई है पण टुरती वेळा जान में केयां रै कीं–कीं खोटवों शुरू हुवण लागग्यो। सेठ बां में अगाड़ियां में हों। मैंगोसेक बणायां तीन–च्यार घंटा हुयग्या हुसी; पड़्यै–पड़्यै में कीं बादी भरीजगी। तपती रो जोर हो ई।

मोटर में बैठ र सेठ दीवानखानो तो नैड़ो लेय ई लियो पण उलटी अर दस्त शुरू हुयग्या। फोन कर र बड़ै डागधर नै बुलायो, हैजो बतायो उण। मोटर में बैठा र बो बडोड़ी अस्पताळ लेयग्यो बींनै। रात भर डागधर पर डागधर, सूयां, ग्लूकोस अर दूसरी दवायां। अेक बजी डागधर बोल्या – अबै घरै जाय र आराम करो। खतरै सूं बारै हुयग्या।

अस्पताळ में इनाम बंट्यो घर घरै प्रसाद।

हुसैनियों घरै आवण लाग्यो जद नव–साढी नव हुंयगी ही। होठां रै फेफी, ताळवो सूकै अर जीभ कलराईजै – अेकदम मुरझायोड़ी। चालण री ही आसंग पूरी नीं। साठ पइसा हा कनै। पैंताळीस पइसा रो तीन सौ ग्राम बाजरी रो आटो ले लियो अर पंद्रह पइसां रा पाव आलू ले टुरग्यो। रास्तै में अेक गाडैवाळो कचोळी–पिचका बेच'र आपरै घरै जावै हो। उण सोच्यो, जावतां ई किसी रोटी हुवै है, हवै अर नीं वै। फेर तो दिन ऊगणो ई ओखो हुसी। गाडैवाळै नै बोल्यो–कीं है कांई रे ?

–कीं भोरा–भुरकला तो है।

–दस पइसां रा कीं है तो दै नी। पइसा काल ले लियै।

उण बुहार झाड़ र लप अेक भोरा बींनै दे दिया। घरै आयो जित्तै नै दो गब्बा उण मार लिया। बासी–कूसी अर बूसीज्योड़ा हा जिसा ई चोखा, भूख में सै चढ़ै है।

घरै पूग्यो। डोकरी खटोलड़ी पर मरबी पड़ी उडीकै ही ई नै –पाळै मरतो सूरज नै उडीकै ज्यूं। पसवाड़ा फोर धापी, कदास अबैई आवै। दम दोरो आवण लागग्यो अर हाडां में ताव री चिणपिण न्यारी।

–मां, अे मां ! बो बोल्यो।

मां थिर हुवती–सी होळै–सै बोली – आयग्यो तूं, मोड़ो कर दियो नीं रे ?

–हुयग्यो, मां हांडी लेय र अेक जान में गयो हो।

–तो कीं चाबो–भूको मिलग्यो है लो बठै ?

–नईं मां, आटो लायो हूं, तैं कह्यो हो नीं।

–बेटा, म्हारी तो उठण री आसंग ई नीं। टुकड़ो दिनूगै भलांई सेकीजो।

–तो अबार तूं ?

–रात–रात में किसी गळूं हूं बेटा ! पड़ी हूं हाड नांख्या, न इसी भूख अर न कारण री आसंग ई, पण तूं ?

–भूख तो है मां, पण दस पइसां रो लपेक भूको (खूमचै रो पूछण) खा लियो हो, रात इत्ती तो निकळगी। इत्तीक और हुवैली, काढ देसूं दोरी–सोरी।

–तो सेकलै नीं दो रोटी। अन्न पूग्यां आंतां सोरी रैसी तो नींद ही सावळ आसी।

–म्हैं ई थक्योड़ो हूं मां, रूं–रूं दूखै है, आसंग नीं म्हारी ई। दिनूगै ई बात अबै तो।

–तो तूं जाणै। बा जी सूं ऊपरकर अेकर तो उठण मतै हुई पण शरीर साथ देवतो नीं लाग्यो, पाछी पड़गी ही जियांई।

उण मां रै डील रै हाथ लगायो – न्यायो हो, दम दोरो अर तांत बोलै ही।

Scanned by CamScanner

बींरा बै भोरा खायोड़ा हा ई। पेट में कीं कुक्ख उठी। उण आधो लोटो पाणी ऊभै ही पेट में नांख लियो। दिन भर री रोसीज्योड़ी आंतां, पेट में भभकी उठगी। आडो हुवै नै दो मिंट ई मसां हुया हुसी, जी दोरो हुय र अेक उल्टी हुयगी। दो–च्यार मिंट बाद अेक दस्त पाणी–सो; फेर अेकदम सतटूट–सो हुयग्यो। डील–बटीजण लागग्यो अर रह–रह आंख्यां आडा तिरवाळा आवण लागग्या।

–मां ? अर फेर दस्त री शंका।

मां जमीं पर हाथ धरती कनै आय र बोली–कांई हुयो रे ?

–तिस लागै है मां अर दस्त ई।

–कांई देवूं रे ?

बा मटकी तांई गई होळै–होळै, पाणी री गिलास झलाई बींनै। अेकै सागै ई पीयग्यो बो। बारै बजी रात रो हेलो ई कींनै मारै अर बैगो–सो सुणै ई कुण सरधा नीं ही तो ई धूजती–टसकती बा बारै आई कियां ई। सोचै ही – दवाई र नांव घर में तो कांदै रो छूंतको ई नीं, पांच–च्यार आलू हुवैला, का धोबो–डौढ धोबो–आटो, किसी कारी लागै बां सूं ? घर रै चिपतो ई सुलैमान रंगारो बसतो, बीं सूं अगलै घर में अधबूढ अक्खो चपरासी अर बींरै सांम्होसाम गुलाब; आपरी घरू स्कूल रो अेक गरीब मास्टर। डोकरी रंगारै नै जगायो, रंगारै मास्टर नै अर मास्टर चपरासी नै। ई अळसा–मळसी में अेक तो अठैई बजगी। सुलैमान कीं कांदै रो रस काढ र पायो। डोकरी धूजै अर बिलताप करै – अरे, म्हारै हुसैनियै नै बचायो कोई, मालक बींरो भलो करै।

अक्खो बोल्यो – नूरी, घबरा मत। मालक सब ठीक करसी।

गुलाब कह्यो – माजी, अस्पताल पूगण री देर है बस। थे नींद लेवो जाय र।

बूढो सुलैमान बोल्यो – थारो है तो कठैई नीं जावै, मालक ने याद कर।

बा उदास–उदास आपरै खटोलियै कनै पूगी।

मास्टर बिचारो बडी मुश्किल सूं अेक तांगलियो कर र लायो। अक्खै नै सागै लेय र बो बडी अस्पताळ पूग्यो कियांई। सूती गंगा बहै ही बठै। ड्यूटी डागधर चढ़ती उमर रो–सो ई हो। बोल्यो – वर्मा साब तो गया, अध घंटा पैलां तो अठैई हा, इसोई एक केस और हो। बै तो अबै दिनूगै आठ बजी ई बापरसी, पण घबरावै जिसी कोई बात नीं। थे जावो भलांई। अक्खै नै छोड र मास्टर घरै आयग्यो।

विंग रै अेक कमरै में स्टोव पर चाय बणै ही। डागधर, नर्स अर कंपोडर चाय बारकर बैठा हा, आपस में हंसी–मजाक करै हा। खळखळी कोई बरामदै सूं बारै तांई जावै ही। पंखा चालै हा अर सिगरेटी धुंवै रा छल्ला कमरै रै अकास में घणा हुय बारै निकळै हा। दवाई हुसैनियै नै दी जिसी दे ई दी, मनेग्यानै अेकर

बै निरवाळा हुआ। बांईटा आवै हा अर तिस बियांई बधै ही। आसार तर–तर माड़ा हुवै हा। रोग रो वेग चालू हो अर जीवण रा किनारा कट–कट मांय पड़ै हा, मौत उफणै ही। अक्खो उदास हुवै हो। सांम्हलै बैड सहारै बैठो अेक बोल्यो – बाबा, अठै तो पद, पइसो अर का हुवै सागीड़ी जाण–पिछाण तो कीं बात बणै, नीं तो कुण कींनै ई पूछै, काम हुवै जियां हुवै।

–अठै तो न जाण है अर न और कोई जोर, हुसी जियांई ठीक है। अक्खै कह्यो।

अठीनै डोकरी अेकर आडी तो हुई, फेर पाछी ई उठगी। नींद तो मरती नै पैलां ई नीं आवै ही, अब बा बिल्कुल ई बिदा हुयगी। रह–रह बींरै गोट उठै हा – ऊंधा सूंधा अर अणमींत। सोचै ही – जे दो रोटी बीं खातर पैलांई उतार राखती तो क्यांनै ? पाव आटो सुलैमान सूं उधारो ई ले आवती, तीन पाव अगलो ई है, कीलो सागै ई दे देवती। आगै किसो राख्यो है कदैई। कमर दूखण लागगी, भळै आडी हुयगी। घड़ी–दो घड़ी बाद भळै उठगी, ईं उठ–बैठ में झांझरकै नैड़ी जाय पूगी।

अक्खो बैड रै चिपाचिप स्टूल पर बैठो हुसैनियै कानी देखै हो। उण अेकर बतळायो बींनै – हुसैनू ?

–हां। फेर आपरी आखी शक्ति भेळी कर बड़बड़ायो बो – बाबा, मां भूखी है दो दिनां री...आटो पड़्यो है....पाणी....। अक्खै हाथां रो सहारो देयर पाणी बींनै पा दियो। जीभ की आली हुई। उण फेर आपरी पीड़ प्रकासी – बींरी सरधा नीं है....ताव है.....थे बैगी बींनै रोटी....।

–ठीक है रे, तूं चिंता मत कर, सब हुय जासी आपैई।

फेर उण न सावळ आंख खोली अर न जीभ, जाणै बीं कनै कैवण नै अबै कीं नीं बच्यो हुवै। रोग रो वेग चालू हो। प्राण सांवटीजै हा। अेक मरोड़ो आयो। अक्खो खाथो–सो उठ र डागधर कनै पूग्यो। डागधर आयो अर देख र हाथ झड़का दिया।

डोकरी खटोलड़ी कनै बैठी सोचै ही – अबै तो कीं पीळो बादळ हुवै दीसै है। सूरज ऊगै तो कोई आवैलो ई, हे मालक, म्हनै भलांई अबार ई उठा लिए, छोरै रै कीं मत हुया मालक, धोळां री लाज राखै। उठ र फेर अगूणै आभै कानी देख्यो – अबै तो थोड़ी देर नै सूरज निकळैलो ई ? बा पाछी ई आपरी सागण जागां बैठगी।

पांच सूं कीं ऊपर हुयगी। दस–बीस मिंट ई घटै हा सूरज निकळण में। अक्खो मूं लटकायां मास्टर कनै गयो – गुरुजी, छोरो तो.....।

–हें ! मास्टर रै पगां रै चाक्यां बंधगी अर जीभ पर अेकर अध मिंट खातर जाणै लकवै री हवा निकळगी। धूजती–धड़कती जिंदगी कनै जाय र बो आ बात कैवै तो कैवै कियां ?

❖ ❖ ❖

Scanned by CamScanner

थे बारै जावो

करणीदान बारहठ

म्हारै घरै जिकै दिन बीनणी आई बो दिन म्हांनै आज भी याद है। बीं दिन नै स्यात बीस साल रै नेड़ै–तेड़ै हुयग्या। म्हारी घरवाळी पदमा नै तो इत्तो कोड चढ्यो कै बा तो पूरै घर में ही कोनी नावड़ै ही – छोरयां, जावो अे, लुगायां नै बुलावो। बारात आयगी, बीनणी आयगी। अे छोरी, तूं जा। थाळी ल्या....रोळी–मोळी ल्या....बीनणी नै बधारां। लुगायां आयगी। थाळी आयगी। रोळी–मोळी आयगी। लुगायां गीत उगेरयों। म्हारै आंगणै बाजा बाज्या। गीत गाइज्या। नेगचार हुया। फेर बीनणी घर में बड़ी।

बीनणी जद म्हारै घर रै आंगणै में काम करती, बींरा छैलकड़ियां रा घूघरिया छमछम बाजता जणा म्हारो जी सोरो हुवतो। म्हैं बी छमछम नै सुणतो। वा छमछम कानां रै जरियै म्हारै काळजै तांई पूगती जणा भगवान रै मिंदर री मदरी–मदरी घंट्या बाजै अैड़ी लागती।

म्हैं आंगणै में बैठ्यो रेवतो। बठैई चाय पीवतो। बठैई रोटी मांग लेवतो। बठैई गपशप करतो रैवतो। म्हारी घरवाळी कैरी–कैरी आंख्यां सूं म्हारै कानी देखती। स्यात म्हैं बींनै सुहावतो कोनी। पैली तो बा टोकती संकती पण छेवट बींनै कैवणो ई पड़्यो – थे बारै जावौ, अठै बीनणी फिरै। थांरै थकां इणनै घूंघटो काढणो पड़ै। कदै ठोकर खायां पड़ जावै, टाबर तो है ई। थे बूढ़ा सारा अठै करो कांई हो ?

जिकै दिन म्हनै लखायो कै म्हैं बूढ़ो हुयग्यो। म्हारो हक आंगणै सूं उठग्यो। घर आदमी रो कोनी, लुगाई रो हुवै। उण दिन सूं म्हैं बारलै कमरै में गयो परो। बठैई रोटी आवण लागगी अर बठैई चाय। म्हनै हेलो मारणो पड़तो। म्हैं कमरै री बारली बोरी खोल ली। गळी में आवतै–जावतै नै देखण लागग्यो।

टैम टिपतां जेज कोनी लागै। म्हारी घरवाळी जिकै दिन म्हनै बूढ़ो बतायो, म्हैं बूढ़ो कोनी हो। म्हारै डील में जवानी वाळी सागी कड़क ही। म्हैं सावळ घूमतो–फिरतो, खेत में काम करतो। बुढ़ापो तो इत्तोई हो कै म्हारो छोरो परणीजग्यो।

दिन आयां बीनणी रै टाबर हुयग्या। जद उण आपरै छैलकड़ियां नै संभाळ र बक्सै में मेल दिया। नुंवा गाभा पैरण छोड़ दिया, बोदां में ई टोपा टिपाण लागगी। औ तो जिंदगी में टैम आवै ई हैं। अबै पैरै भी कियां, बा कदै टाबर संभाळती, कदै घर रो काम। बींनै काम सूं ई ओसाण कोनी मिलतो। धीमै बोलणवाळो बहम ई उण छोड़ दियो। पोसावै ई कियां, टाबर जक कोनी लेवण दै। वै लड़ै तो डांट लगावणी पड़ै। बा होळै बोलणै सूं पार पड़ै कोनी। घूंघटो भी अबै नेम तोड़ण लागग्यो। कदै राखती तो कदै मूंढो उघाड़ो हुय जावतो। मूंढै पर जिकी भोर में खिलतै फूलां री लावणी ही बा कीं तो टाबर चूंघग्या, कीं बगत बुहार परो लेयग्यो। पण जिको मोटो फरक आयो बो औ कै उण इण घर नै आपरी मुट्ठी में लेय लियो। टैम री सूई बा घुमावै बठीनै ई घूमै। म्हारली बूढली कदैई बींनै हुकम देवती पण अबै बा हुकम सारू उणरै मूंढै कानी ताकती – बीनणी, म्हारै पीहरवाळां रो कागद आयो है। तूं कैवै तो जावूं, नीं टाळ करूं, है तो ब्याह।

जद बीनणी आपरै अफसरी लहजै में कैवती–थांरो जरूरी है तो जावो। थांरै सागी भाई रो तो ब्याह कोनी। क्यूं भाड़ो लगावो ? अठै जावणो अै टाबर म्हारी जान नै रोवैला। सगळा थारै हाड हिळ रह्या है। कुण राखैला आंनै ?

म्हारी घरवाळी बीनणी रो आदेश न मिलणै पर टाळ कर देवती पण खुद नै जावणो हुवतो जणा बा आपरी सासू रो आदेश कोनी चावती। फकत सूचना दे देवती – म्हैं म्हारै पीहरै जावूं। आप डांगरां नै नीर दीज्यो। गावड़ी दूध देवै है, दूध काढ़ लीज्यो। बिलोवणो हुवै तो बिलोय लीज्यो, नीं टाळ कर दीज्यो। अर आपरै टाबरां सागै बहीर हुय जावती।

टाबर जणै इण धरती पर उतरै, बेल बधै ज्यूं बधै। बींरा टाबर ई बडा हुवणा ई हा। अर म्हैं जाणै अबै बुढापै कानी बेगो–बेगो भाग रह्यो हो, इयां लागै हो।

दिनूगै उठूं। पाणी म्हारै सिराणै रैवै, पी लेवूं। आ म्हारी सदां री आदत है। कदैई होको भर लेवूं तो कदैई बीड़ी सिळगा लेवूं। बीड़ी–होको पीवता धांसी आवै जिकी आवै ई। सागै बलगम आवै। हिम्मत कोनी रही कै उठ र बारै थूकूं। बठैई थूक देवूं। म्हनै म्हारै सूं ई घृणा हुवण लागगी, बीनणी अर टाबरां नै तो हुवणी ज ही। अेक दिन बीनणी म्हानै बोलती सुणीजी – अबै बाप–सा इण कमरै रै रैवण जोगा कोनी रह्या। आंरो मांचो बारली चूंतरी पर घाल दिया करो, बठैई थूकता रैसी। कमरै रो सत्यानाश हुय रह्यो है। औ कोई ढंग है ! तो कमरो तो म्हारो बणायोड़ो हो पण धणी और हुयग्या। पण बींरी बात साची ही। म्हारो बणायोड़ो कमरो म्हारै हाथां नाश हुवै हो। अबै म्हारी घरवाळी रो ई सत कोनी रह्यो। बींरा ई गोडा दूखण लागग्या। बा लाठी रै सहारै चालण लागगी। लोग कैवता – इण

Scanned by CamScanner

बुढापै रो कोई धणी–धोरी कोनी। इणरो कीं नीं बटै । लोग इणनै मोल कांई, उधार ई कोनी लेवै। बो बुढापो म्हारै सिराणै–पगाणै आयर ऊभो हुयग्यो।

पैली तो म्हारै पैलै हेलै रो असर हुवतो। अबै पांच हेला ई अकारथ जावै। छोरा मूंढो मचकोड़ र भाग जावै। बीनणी बांनै ललकारै जद कीं सुणै।

म्हैं रोज बारली चूंतरी पर सोवूं। बठैई छेरा म्हनै होको भर र ला देवै, बठै ही पाणी पकड़ा देवै अर बठैई रोटी।

घरवाळा पैली म्हनै पूछ र सब्जी बणाया करता, फेर बां बो बहम ई छोड दियो। पैली म्हैं ई रोटी में काण–कसर काढ दिया करतो; म्हैं ई बो बहम छोड दियो। जैड़ी भी लूखी–सूखी आवती, खा लिया करतो। काया नै भाड़ो देवणो हो, दे दिया कर तो। ऊपर पाणी पी लिया करतो। जवानी री बात और ही, बुढापै री बात और। बुढापै री खुराक ई बदळ जावै। दिनूगै कोई री सब्जी सूं रंजै कोनी। कीं छाछ–राबड़ी हुवै तो पेट भर्‍योड़ो लागै। काया तिरपत हुवै तो हुवै, नीं हुवै तो नी हुवै। पाणी पी र जी नै टिका लेवै। और जोर ई कांई चालै ? बुढापो सोचै – टैम टिप जावै तो सही है। रात नै कीं दूध–खीचड़ी मिल जावै, धान हळको हुवै तो ठीक रैवै। नींद सावळ आवै। नीं तो कदैई ऊदस उठै, कदैई जी दोरो हुवै, कदैई सांस उठै, कदैई नींद नीं आवै, पण टैम तो टिपाणो है, टिपावै। उपाव ई कांई ?

अेक रात पतो नीं कांई बात हुई कै रोटी आई ज कोनी। म्हैं हेला ई मार्‍या पण सुण्या कोनी। राम जाणै कांई हुई कै सगळै ई सून्याड़ हुयगी जाणै च्यारूं कानी सोपो हुयग्यो। पैली तो भूख हेला मार्‍या पण बा ई जपगी। म्हनै नींद रो अेक गुटको आयग्यो। भूख ई नींद मांगै पण मांगै कद तांई ? म्हैं जाग्यो जणा भूख सागै जागगी। म्हैं दुखी हुयो, मन में पछतावो आयो। सोचण लाग्यो कै इण सूं तो मौत आछी। म्हैं रोटी सूं ई मूंघो हुयग्यो।

म्हैं हिम्मत कर परो उठ्यो। घर च्यारूं कानी बंद हुय रह्यो हो। स्यात सगळां रै ऊपराकर नींद फिरगी। आसै–पासै कुतिया जागता रैवता बै ई सोयग्या। म्हैं फेरूं मांची पर आय र पोढग्यो। आज कांई हुयो ? घरवाळा म्हारी रोटी ई भूलग्या। म्हारी बूढली कठैई पड़ी हुवैली भेळी हुयोड़ी। बींनै सुणीजै नीं, सूझै नीं। बींरो आपरो बोझ ई कोनी संभै, म्हारली कुण सुणै ? मन में विचार कर्‍यो – छोरा भूलग्या दीसै। पण छोरा गया कठै ? स्यात रामलीला घलै है गांव में, बठै गया दीसै। म्हैं आडो होवूं। फेरूं बैठ जावूं। भूख नै नींद कठै ? म्हैं फेरूं अेक गुटको पाणी पीयो। फेरूं अेक बीड़ी सिळगाई।

इत्तै में दूर टाबर बोलता सुणीज्या। स्यात रामलीला खिंडगी। छोरा आवता हुवैला। बात साची निकळी। छोरा – नेड़ा आयग्या। म्हैं हेलो मार्‍यो – अरे कुण है ? घोटियो है कांई ?

–हां दादा।

–साचाणी घोटियो हो।

–अरे घोटिया, म्हैं तो भूखो ई हूं।

–अरे दादा, म्हैं तो भूल ई ग्यो।

–वाह भाई, वाह।

घोटियो अर पूरणियो मांयनै गया अर मां नै जगाई।

–मां, ओ मां ! आज दादो भूखो ई हैं।

–अरे मर मरज्याणा, म्हनै तूं काची नींद सूं जगा दी। तेरा हिंयो फूटेड़ो हो ?

बा बरड़ायां जावै ही। कह्यां जावै ही। हुकम दियां जावै ही। बा फेरूं बोली – अरे बीं हांडी में देख। कीं खुरचण पड़ी हुवैला, घाल दै। दूध रो अेक पळियो घाल दै। गिट लेसी।

म्हनै बा बरडावती सुणीजै ही। बोलती सुणीजै ही। हुकम देवती सुणीजै ही।

रात ठंडी ही पण काया गरम ही, बोल गरम हा। म्हैं ना बोल सकै हो, ना चाल सकै हो, ना कीं कर सकै हो।

छेवट उण अेक बात कही जिकी रा बोल काळजै गडग्या। बा बोली – गांव रा सगळा बूढ़िया–बूढली मरग्या। आपांवाळां बूढियां नै मौत ई कोनी आवै। पतो नीं अै गळै रा हाड कद निकळसी ?

❖ ❖ ❖

Scanned by CamScanner

हिरणी

बैजनाथ पंवार

हिरणी म्हारी पैली लुगाई ही।

नांव तो उणरो रतनी हो पण म्हैं हिरणी ई कह र बतळावतो। हिरणी री दांई जाबक भोळी – ठेठ गांव री। उणरै भावैं दूध ई धोळो अर छाछ ई धोळी। अेक री दो नहीं जाणै। जाबक बचकूकर ! पैली दफै दिल्ली सिरखै शहर नै देख र डांवरेड़ी हिरणी दांई हुयगी। अेकै सागै इत्ता मिनख, मोटर अर गाड्यां नै देखर बावळी हुयगी। ठेसण सूं जद भाड़ै री मोटर में बैठा र उणनै घरै लायो तद पैलीपोत आ ई बात बूझी कै रात नै अै इत्ता मिनख कठै जासी ? आ कह र बा आपरा हिरणी रा–सा डीघा–डीघा नैण घुमाया। म्हैं उणरो भोळपणो अर सीध ोपणो देख र पैली तो हंस्यो, भळै उणनै बतायो कै तूं थोड़े दिनां में आ बात आपैई जाण जावैली।

म्हारो मकान शहर रै अेक गंदै अर सूगलै मोहल्लै में हो। मकान कांई, किणी मक्खीचूस पेंशनशुदा अफसर या किरायै खातर बणायोड़ा दसेक क्वार्टर हा। इणा में अेक कोठडी, ऊपर टैणा री रसोई। दसूं क्वार्टरां रै बिचाळै अेक नहाणघर अर उणरै चिपतो ई अेक सूगलो–सो जाजरू। कोठड़ी जिणमें ऊभो मिनख मावै कोनी। अेक खाट घाल र थोड़ी–सीक जगां ऊबरै। खाट रै नीचै पेटी, खूणै में पाणी री मटकी, बाकी घर–गिरस्थी री छोटी–मोटी जिनसां। छात पर रसोई में पांच–सात बरतण। सिगरेटां अर च्यवनप्रास रा खाली डिब्बा जिणा में मिरच अर मसाला। म्हारो कोई बेली–मिंत जे म्हारै कनै मिलण नै आय जावै तो हिरणी रसोई में ऊपर जावै परी अर ऊपर बैठी सोचती रैवै कै आवणवाळो कद जासी ? जे कोई पाड़ोसण हिरणी सूं मिलण नै आवै तो म्हैं उणरै पगां रा खुड़का सुणतां ई ऊपर रसोई में जाय बैठूं। जद तांई पाड़ोसण नहीं जावै, म्हैं रसोई मे ई बैठ्यो मिरच–मसालां रा डिब्बा गिणतो रैवूं। रसोई रै चिपतो ई नहाणघर अर छोटो–सोक जाजरू। दफ्तरां में जियां फर्नीचर रै तोड़ै सूं च्यार–च्यार बाबू अेक ई मेज पर काम करै, उण भांत म्हैं अर म्हारा पाड़ोसी उण न्हाणघर अर जाजरू

नै बरतां। क्वार्टरां में गड़पड़तां पांच–पांच रै हिसाब सूं छोटा–मोटा पचासेक जीव हा। म्हारै जे अेक ई टाबर नीं हो तो कांई; पाड़ोसी क्वार्टरां में सात–सात टाबरां री डार–री–डार फिरती। क्वार्टरां सूं बारै कीचड़–कादो ! कूरडी पर आखै दिन माख्यां भिणकती। देख्यां जी घबरावतो। उल्टी–सी हुवण लागती। छोटा टाबर जिणा रै घणी तागड़ हुवती, जे जाजरू में बारी नहीं आवती तो बै कूरड़ी री शोभा ई बधावता। गंदा नाळा अर मोर्‍यां में दिन–भर सूवर अर सूरड़ी पड़्या लाधता का कीं–न–कीं सोधता ई दीसता।

दिन में म्हैं तो दफ्तर जावतो परो अर हिरणी बैठी आपरै गांव री बातां याद करती रैवती। गांव रा ऊजळा धोरिया, फोग, बांठ अर नीमड़ां री छीयां में बैठी भैंसां अर गांयां री ओळ्यूं करती। पींजरै में कैद हिरणी री दांई बा आखै दिन रसोई सूं कोठड़ी अर कोठड़ी सूं रसोई बिचाळै गड़का लगावती। मीयां री दौड़ मसीत तांई। अेकली बारै जावती डरती।

दिन में तो कीं ठाह कोनी पड़तो पण रात नै गळी रा कुत्ता इस्यो रमझोळ मचावता, इसी लड़ायां करता कै म्हांरी नींद हराम। रात नै जे नींद पूरी नहीं आवै तो दूजै दिन अळसाक। फेरूं भी इण कोठड़ी में धाकौ धिकावां।

कोठड़ी रो दरूजो भी बैंकुठ री दांई खासा सांकड़ो ई हो। म्हारै जिसा तकतूळिया जवान तो सरड़ाट करता उण में घुस जावता। पण गांव री मोथी दोलडै हाथ–पगां री हिरणी उणमें दोरी ई मावती। भारत री रेलां में दूजै दरजै रै डिब्बै में बड़णो अर म्हारी कोठड़ी में बड़णो सिंहगढ़ विजय सूं कम कोनी हो। बार–बार मकान पळटणै रो विचार करता पण घरू बजट रै आंकड़ै कानी निजर पड़तां ई मन माठो पड़ जावतो। दिल्ली सरीखै शहर में इत्ती ठौड़ मिलणी कम नीं ही। खिड़की रै नांव पर उण कोठड़ी में बिलानेक लाम्बो–चौड़ो झरोखो हो। उणनै दो–च्यार बार खोलण री हिम्मत करी पण छेकड़ ढकणी पड़ती। खिड़की खोलतां ई सांम्ही खुली जागां में मेहतराण्यां जाजरू खाली कर र आपरी टोकर्‍यां उणी ठौड़ ऊंधी करती। आथूणी पून रै फटकारै सागै बदबू–ई–बदबू हुय जावती।

च्यार–छह महीनां तो दोगाचींती में इयांई बीतग्या हिरणी गाव में कुदड़का मारती, कूवै पर पाणी लावण नै जावती अर पाड़ोसणा सागै हंसती–खिलती आवती। घर में च्यारूंमेर रम–झम–सीक रौवती। अठै औ कांई हुयो ? दिल्ली आयां फेरूं बा ओळा मार्‍योड़ी कमेड़ी री दांई सिटगी। सूख र जाबक नाकै लागगी। गांव री जीवणदाई सोरम, जिकी उणरै रूं–रूं में भर्‍योड़ी ही, कठैई अलोप हुयगी। उण री ठौड़ शहर री सूगली दीवळ सूं डील सुळण ढूक्यो। म्हैं तो कियांई कर परो धिकावतो गयो पण हिरणी जाबक सिटगी।

अेक दिन म्हैं बारै सूं आयो। बा रसोई रै काम में लाग्योड़ी ही। रोटी करती

Scanned by CamScanner

जावै अर आंसूड़ा ढळकावती जावै। म्हैं देख र डर्‌यो। बूझ्यो – कांई बात है ? रोवै कींकर ?

बा पल्लै सूं आंसू पूंछ र मुळकण री चेष्टा करी अर बोली – नईं तो।

म्हैं गौर सूं उणरै मूंढै कानी देख्यो। आंख्यां पीळी, मूंढो उतरयोड़ो, रंग पूणी–सो घोळो। खून री अेकोअेक बूंद जाणै किणी चूसली हुवै। म्हैं भळै बूझ्यो – कांई बात है ? आवड़ै कोनी ?

चोट घाव पर लागी। सुणतां ई बुसक्यां फाटी। सिर गोडां में दे दियो अर आंख्यां में सावण–भादवो अेकै सागै ई आय ढूक्या।

–जे नईं आवड़ै तो म्हैं थांनै गांव पूगाय देसूं। कांई आंट है ? म्हैं कह्यो।

हिरणी पल्लै सूं आंख्यां पूंछ र बोली–तो थांरो कांई हाल हुसी ? रोटी कुण बणासी ? होटलां में टुकड़ा खावतां–खावतां तो औ डोळ हुयग्यो !

–तो इण भांत बळद मार र तो खेती करणी कोनी । तूं दिनोदिन सिटती जावै। शहर रा हवा–पाणी थारै जचै कोनी। तूं गांव में ई रह। बदळी तो म्हारी हुई है, थांरी थोड़ी हुई है।

हिरणी बोली – पण आ सिरकीबंदां री–सी जिनगाणी कदतांई चालसी ? म्हैं उथळो दियो – इसी जिनगाणी तो आज आखै मिनखां री हुय र है। अेकलो म्हैं ई तो आ जिनगाणी बितावूं कोनी। देश रा लाखूं–करोड़ूं लोग खानाबदोसां री दांई घरां सूं सैकड़ूं कोसां अळगा;........काळा कोसां पड़्या है।

हिरणी कह्यो – थे बताया करता नीं कै आपणी सरकार लाखूं बेघरबार अर उजड़्योड़ै लागै नै बसावै है। पण म्हैं देखूं कै औ बसावणो कांई, औ तो उजाड़णो है। घर रै आखै मिनखां नै अळगा करणा है। मां–बाप कठैई है तो बेटा–बेटी दूर कठैई

म्हैं बोल्यों–आ तो नौकरी है। सरकार कांई करै ?

हिरणी कह्यो–तो सरकार उणानै नौकरी गांव में ई दे देवै नीं। अबै म्हैं उणनै कांई कह र समझावूं ? हिरणी ना तो भोळी अर ना स्याणी। सांम्है चूल्है कानी देख्यो तो रोटी बळगी। बातां–ई–बातां में ध्यान कोनी रह्यो।

म्हैं सोच्यो कै अबै औ सूगलो अर छोटो–सोक घर छोड़ र किणी साफ–सुथरी जागा चोखो मकान लेवणो चाइजै जिणसूं जी भी लागै अर नीरोग भी रैवां। जे चोखो मकान मिल जावै तो हिरणी गांव नीं जावै, औ निर्णय कायम रह्यो।

म्हैं दूजै मकान रो प्रबंध करण रो संकळप लेय र उठ्यो। रोटी तो कांई भावै ही। दो–च्यार टुकड़ा गळै उतारया अर पाणी रो गुटको लेय र ऊभो हुयग्यो। हिरणी घणा ई निहोरा काढती रही पण म्हैं उठग्यो जिको उठग्यो, भळै कोनी बैठ्यो। पगरखी पैर र सीधो गांधी कोलोनी में अेक भायलै कनै गयो। हेलो पाड़्यो। किंवाड़ खुल्या। अेक छोरी बोली–काकोजी तो घरै कोनी।

– कठै गयोड़ा है ?

– बै तो कोई मकान ढूंढण नै गया है। बा बोली।

– क्यूं, ओ मकान है नीं। भळै दूजो क्यूं ?

– इणरो किरायो बधा दियो सो पोसावां कोनी।

सुणतां ई म्हैं सागी पगां बावड़्यो। कोलोनी रो अेकाअेक मकान भाड़ेती री निजरां सूं देखतो गयो म्हैं। अेक कूंट पर गळी मुड़तां ई 'किरायै खातर खाली' लिख्योड़ो देख्यो। मन में हरख हुयो जाणै आ बिद बैठ जासी। औ सौदो पटतो दीखै। मन में देवी–देवता मनावतो उण कानी चाल्यो तो मकान रै ताळो लाध्यो। पाड़ोसी रा किंवाड़ खटखटाया तो अेक चश्माधारी मेम किंवाड़ खोल्या। रीसां बळती बोली – क्या मांगता है ?

मकान कानी आंगळी कर र म्हैं भाड़ो बूझ्यो।

–अेक सौ पचास ! अेक माह रो अगाऊ। सुण र म्हैं तो कान बोच लिया। जे भींत सहारै नीं हुवती तो भुंवाळी खाय र पड़ जावतो। मेम साब बड़बड़ करती किंवाड़ ढक लिया। म्हैं कीं गमायेड़ो–सो आगीनै बहीर हुयो।

दो–च्यार जागां और भचीड़ खाया। छेकड़ जी काठो करयो – जाड़ भींच र अेक मकान सित्तर रिपियां में जचा ई लियो। मकान हवादार और फूटरो हो। अेड़ै छेड़ै खुली जागां। आड़ोसी–पाड़ोसी भी ठीक ई लाग्या। आधा रिपिया धणी नै देय र रसीद लेय ली। अंबार सामान लेय र आवणै र पकाई करी। मन में घणो कोड। खाथो–खाथो चालतो जावूं अर सोचतो जावूं कै अठै आय र म्हारी हिरणी भळै कुदड़का मारैली। बीं घरकुंडियै सूं निकळ र अठै सोरी रैवैली। बीस–तीस रिपिया दवायां रा लागता जिका अठीनै भाड़ै में लाग जासी। कोई बात नीं। काण धड़ै में आ जासी। कोई अड़ांस नीं।

मारग में दो तांगा भी सागै ई लेय लिया। आज वार चोखो हो सो आज ई नुंवै मकान में डेरो देवणो हो।

तांगां नै बारै ऊभा कर म्हैं घर में बड़्यो। हिरणी नै नुंवै मकान सारू बधाई देवण नै बोल्यो – बोरी बिस्तर बांध र अबी चालणो है। बारै तांगा तैयार ऊभा है।

हिरणी कीं बोली कोनी। म्हैं देख्यो, नींद आयगी हुवैली। रसोई में झांक र देख्यो तो कान खूस र हाथां में आयग्या। हिरणी थाळी पर मूंधी पड़ी है। लाइट जगै ही। गाभा अठी–अठी हुयोड़ा हा। आधी रोटी खायोड़ी। साग–सब्जी खिंड्योड़ा। हिरणी नै दोरो आवतो। जाड़–दांत भिंचग्या। हाथ–पग ठंडा हुयग्या। नाड़ी देखी तो ठंडो हुयग्यो। हिरणी लाम्बी छलांग लगायगी लागयगी।

बारै ऊभा तांगैवाळा हेलो देवै हा – बाबूजी ! जल्दी करो। मोड़ो हुवै है।

❖ ❖ ❖

Scanned by CamScanner

नीलकंठी

माधव नागदा

गीता बोरी रो तापड़ियो लाय आंगणै बिछायो अर बोली – बैठ !

म्हैं आज्ञाकारी टाबर री दांई बैठग्यो अर गीता म्हारै सांम्है।

–आज गेलो कियां भूलग्यो ?

–यूं ई याद आयगी तो आयग्यो ।

–रैवण दे, म्हारै जिसा नै कुण याद करै ? गीता रै चेहरै माथै उदासी पुतगी। बींरी आंख्यां ऊंडी गयोड़ी ही अर च्यारूंमेर काळा घेरा बणण लागग्या हा।

–तूं दूबळी घणी हुयगी गीता ! कांई बात है ? जीजोसा रोट्यां तो पूरी देवै कै नीं ?

–थनै देख्यां नै कितरो बगत हुयग्यो; पूरा च्यार साल। उण बात नै टाळण री कोशिश कीधी।

–म्हैं ई थारो ब्याह हुयां पछै थनै पैलीवार देख रह्यो हूं। तूं गांव तो कदैई आवै ई कोनी। आवै ई क्यूं ? अबै तो शहर री वासी हुयगी। गांव दाय कियां आवै ?

म्हैं सोच्यो – म्हारी मीठी मसखरी सूं बा राजी हुवैली पण बा तो औरूं उदास हुयगी। गीता रै व्यवहार में म्हनै कीं भेद लाग्यो। आ बा गीता कठै जिकी गांव री गळ्यां में बकरी रा नैना बच्चा रै ज्यूं कूदती–फिरती। कदैई आंबा री डाळ माथै बैठी निजर आवती तो कदैई आंबली री गहरी छींया में। मुळक तो जाणै उणरै मूंढै छायोड़ी ही ! बात–बात में हंसण लागती। म्हारै अर गीता रै आपसरी में खूब पटती। आखोदिन सागै–सागै रमता अर दौड़ता–फिरता। धूड़ में खेलता, मगरा में गायां चरावण नै जावता अर सागै–सागै प्राइमरी स्कूल में भणवा जावता। अेक दिन म्हैं उणनै कह्यो – गीतूड़ी ! म्हैं थनै ई परणूंलो।

–हट ! शक्ल तो बांदरै जिसी है अर म्हनै परणैलो। जा, पैली मूंढ़ो धोय र आ नाळचा में। अर गीतूड़ी खिलखिलाट करती किणी झाड़ी री ओट हुयगी ही। म्हनै हंसी आयगी।

– कांई सोचै है ?

–की नीं। टाबरपणै री कोई बात याद आयगी।

–किसी बात ?

–बा परणबा री।

– अरे, थनै याद है हालतांई ?

गीता खिलखिल करती हंसण लागी। इतरी जेज पछै म्हैं असली गीता देख सक्यो। पण औ कांई ? हंसती–हंसती बा अचाणचक चुप हुयगी। जाणै सौ वाट रो बल्ब उजास देवतो–देवतो अचाणचक फ्यूज हुयग्यो।

बा उठगी। कैवणी लागी – म्हैं ई किसी क बावळी हूं। आवतां ई बातां करण नै बैठगी। चाय–पाणी रो ई कोनी पूछ्यो।

म्हारी इच्छा तो हुई कै बींरो हाथ पकड़ र बिठाय लूं पण बींरी आंख्यां जळजळी हुयोड़ी देख र हिम्मत नीं हुई।

गीता खांडो गिलास म्हारै कानी कीधो अर बुच्चो मग लेय र खुद बैठगी। गिलास में काळै रंग रो गरम पाणी भर्‌योड़ो हो।

–इण बगत होटलां में दूध ई नीं मिलै। काढो बणावणो पड़्यो। म्हैं गीता रै मूंढै कानी देख्यो। बा कीं घबराई। पछै होळै–होळै आडी रो अरथाव सांम्है आवण लाग्यो। म्हनै लखायो कै गीता इण घर री कैवण नै राणी है। घर री चाबी तो किणी दूजै कनै ई है। कांई गीता इतरी दबेल है कै दूध रा पइसा ई खरच नीं कर सकै ? ना–ना, भगवान करै म्हारो अंदाज खोटो हुवै। पण गलत ई कियां मानूं ? गीता रै डील रा गाभा ई साख भरै। ठौड़–ठौड़ कारयां लाग्योड़ी। गीता री सूनी–सूनी आंख्या अभाव रा गीत उगेरै ही। खाली–खाली कमरो गीता रै मून नै वाचा देवै हो। गांव में तो सगळा ई कैवै कै गीता शहर में खूब सुखी–सोरी है। कांई जवानी में ई आंख्यां री चमक गायब हुवणी सुखी–सोरो हुवणो है ?

–गीता !

– हूं !

–अेक बात पूछूं ? साची–साची बतावैली ?

–पूछ।

–तूं अठै खुश तो है नीं ?

सुणतां ई गीता री आंख्यां सूं सावण–भादवो ओसरण लाग्यो।

–च्यार बरसां पछै ई सही, पण कोई मिल्यो तो सरी म्हारो सुख–दुख पूछणवाळो। म्हारै मूंढै सूं थनै कांई कैवूं ? थोड़ी क जेज में थारा जीजोसा आवणवाळा है। बै खुशियां रो नुंवो तोहफो लेयर आवैला। तू खुद ई देख लीजै !

–कांई धंधो करै बै ?

–उणानै ई पूछजै। म्हनै कीं ठाह नीं पड़ै धंधै री। लोग कैवै, बै मटकै रो धंधो करै। म्हैं तो पाणी भरण रो मटको जाणूं।

म्हनै समझतां जेज नीं लागी कै घर री हालत माड़ी क्यूं है।

Scanned by CamScanner

–साल–डेढ साल तो ठीक निकळ्यो। पछै नीं जाणै उण आं माथै कांई जादू कीधो।

–कुण कीधो ?

–उणीज, जिणनै इणा घर में घाल राखी है, न्यारो कमरो लेय र !

–ओह, तो आ बात है ! लुगाई रो सैंग सूं मोटो दुख सौत हुया करै।

–यूं कींकर हुयग्यो ?

–म्हैं फूटरी नीं हूं। म्हैं पीहर सूं दायजो नीं लाई। म्हारै आस नीं बंधी।

बारली फाटक चूं–चूं करती बोली। अेक अधबूढ़ी लुगाई मांय आई। म्हैं अंदाज लगायो कै गीता रा सासूजी है।

–लाडी कठीनै है ? बांरी बोली में सनेव घुळ्योड़ो हो।

–बाई, अठीनै आवो। देखो, आज कुण आया है ?

–कुण हुवैलो ? माजी कमरै में आवतां–आवतां पूछ्यो।

–म्हारै पीहर सूं काकाई भाई आयो है।

–पधारो–सा ! कांई बात है ? थे लोग तो गीता नै भूलग्या दीसो। कोई आवै–जावै ई कोनी। माजी मीठो ओळभो दियो।

–बै देखै, शहर में दी है, खूब सुखी–सोरी हुवैली। संभाळ र कांई करणो है। गीता रै चहरै माथै सागण उदासी पुतगी।

–गांव में सैंग राजी खुशी है ? माजी पूछ्यो। गीता बीच में ई बोली – अरे हां, म्हैं तो पूछणो ई भूलगी। म्हारा पापा–मम्मी तो ठीक है ?

–अबै पापा तो साव थाकग्या। आंख्यां में मोतियो उतरग्यो। इण कारण कीं कम दीसै। गोडां में गंठियै रै कारण पीड़ रैवै। थनै खूब याद करै।

–भाई कींकर है ? उण रो सुभाव कीं धीमो पड्यो कै नीं ?

–कठै धीमो पड्यो ? आयै दिन किणी–न–किणी सूं लड़तो–झगड़तो रैवै। पापा–मम्मी सूं लड़ र न्यारो हुयग्यो।

गीता रा सासूजी निसकारो नांख्यो – आजकाल वायरो ई इसो बाजग्यो। टाबरां रा गू–मूत धोय र मोटा करां, परणावां–पतावां....अर बै ई मोटा हुय र छाती माथै मूंग दळण ढूकै। आ जाणता हुवां तो जलमतां ई पटकी देय देवां। सगळी दैण मिट जावै। इसी कुमाणस औलाद सूं तो बांझड़ी ई चोखी ! लाडी, अबै तो सुण्यो कै कुंवरसा बी नागण नै अठै लाय रह्या है।

–ना–ना ! गीता जाणै नींद सूं जागी। इयां लखायो जाणै नागण निजरां सांम्है आयगी हुवै।

–लावण तो दो। अठै आपां दो जणी हां। रांड रै माथै पड़ांला तो खाटो निकाळ देवांला।

थोड़ी ताळ कमरै में मून रह्यो। अेक मोटो–सीक ऊंदरो कमरै में अठी–उठी दौड़ै हो। म्हनै लखायो कै चिंतावां अर विचारां रो अैड़ो ई टणको ऊंदरो म्हां तीनां

रै मन में कूदै हो।

माजी मून भांग्यो–गीता, रोटी–पाणी री तैयारी करसी कै भाई नै भूखो ई टोरसी ?

–तूं आजकाल कांई करै ? गीत रोटी चुपड़ती बोली।

–नौकरी।

–किसी नौकरी ?

–लेक्चरार री।

–लेक्चरार फेर कांई हुवै रै ?

–मोटा छोरां नै भणावै।

–अरे तो यूं कैवै नीं, मास्टर हुयग्यो है। कितरी तनखा मिलै ?

–आ ई कोई दो हजार रिपिया।

–अरे बाप रे ! इतरा ? म्हारै मूंढागै सेडो चाटतो फिरतो अर अबै इतरी तनखा कमावण लागग्यो ?

– तू ई म्हारै सांम्है उघाड़ी फिस्या करती।

–आ ई कोई दो हजार रिपिया।

उघाड़ी री कल्पना सूं गीता नै लाज आयगी।

–कठै लागी है थारी नौकरी ?

–अठैई थारै शहर में !

–साची ? जद तो आवतो रहीजै संभाळण नै।

बीं रात म्हैं गीता रै घरां ई सूतो। सोवतां ई झट नींद आयगी। पण आधी क रात नै हाको–हूबो सुण र म्हारी नींद उडगी। कनलै कमरै में कोई आदमी जोर–जोर सूं गाळ्यां काढै हो। कदास जीजोसा हा। गीता रै वास्तै खुशी रो तोहफो लेय र आया हा।

–निकळ जा रांड म्हारै कमरै सूं।

दूजी आवाज गीता री ही। आवाज धीमी ही इण कारण म्हनै कान लगाय र सुणणो पड्यो– म्हैं क्यूं निकळूं ? इण रांड नै निकाळो। म्हैं तो सात फेरा खाय र आई हूं। ऊभी आई। आडी जासूं।

–निकळै है कै लगावूं दो लात ?

जीजोसा री जबान लड़खड़ावै ही। कदास दारू चढ्योड़ो हो।

–भलांई मार नांखो पण म्हैं नीं निकळूं। इण रांड नै निकाळो।

–रांड राड़ करै पड़ी; निकळ बारै !

धम–धम री आवाजां आवण लागी। सुभट लखावै हो कै जीजोसा तोहफै री गांठड़ी गीता री मोरां माथै पटकै हा। पछै ठरड़ण री आवाज आई। छेवट किणी दरवाजो बंद कर मांय चिटकणी लगाय दी। कमरै सूं अेक मरद अर अेक लुगाई री रळी–मिळी हंसी म्हारै कानां में सूळ–सी उतरगी।

Scanned by CamScanner

थोडी ताळ पछै डुसका भरती काळी छींया म्हारै कमरै में होळै–होळै पूगी अर मांचै कनै ढबगी। म्हैं बींरो हाथ झाल लीधो–गीता ?

गीता बावळी–सी हुय र हेटै पड़गी। म्हारी छाती में मूंढो घाल र रोवण ढूकी। छाती रा रू बींरै आंसुवां सूं तर हुयग्या। म्हारो जीवणो हाथ बींरी मोरां माथै होळै–होळै फिरण लाग्यो। म्हारी आंगळ्या बींरै मन री लाय नै ठंडी करण रो जतन करण लागी। दोनूं चुप पण मन भरया–भरया। म्हारी थावस सूं बींरो रोवणो हिचक्यां में बदळग्यो। थोड़ीक ताळ में म्हनै नींद आवण लागी। गीता ई होळै–सीक उठ र बोरी बिछाय र नीचै आंगणै माथै सूयगी। म्हनै नींद में ई लखायो कै म्हारै ओळै–दोळै हिचक्यां रो समंदर हबोळा खावै।

दिन ऊगतां ई म्हैं गीता सूं सीख मांगी। जीजोसा अर बा लुगाई अजै कमरै में ई बंद हा। गीता रा सासूजी काम–काज में लाग्योड़ा हा।

–गीता, अबै म्हैं जावूं ?

–हां भाई, जा ! सवा पोहर रो पीहर हुयग्यो। म्हनै तो अठै ऊमर काढणी है।

–तू अठै कियां दिन काढसी ? चाल म्हारै सागै, थनै गांव पुगाय दूं।

–नीं रे भाई। बैन–बेटी सासरै ई चोखी लागै। दांत मूंढै में ई शोभै। अठै कम–सूं–कम सासूजी रो सहारो तो है। उठै म्हारी भाभी नै तो तूं जाणै ई है। मेहणा देय–देय र म्हारा कान पोला कर नांखैला। फेर मां–बाप कितरा दिन रा ? पाका पान है। आज है अर काल कोनी। पछै थोड़ी क रुक र बोली – जीवती रही तो राखी नै आवूंली !

गीता री आंख्यां सूज्योड़ी–सूज्योड़ी ही जाणै मक्की रा दाणा नै तवै माथै नांख र फुलाया हुवै।

–तूं गांव कद जासी ? गीता पूछ्यो।

–थावर वार नै।

–मम्मी–पापा अर भाईजी नै कहीजै कै गीता मजै में है। बा सोरी–सुखी है। कोई चिंता नीं करै !

म्हैं सोच में पड़ग्यो।

–अठै री कोई बात उठै मत कहीजै। नींतर बिचारा मां–बाप दो दिन जीवता हुवैला तो ई नीं जीवैला। थनै म्हारी सोगन है। कोई बात मत करजै। कहीजै, गीता शहर में सोरी–सुखी है। कोई बात री कमी कोनी।

म्हैं गीता कानी खरी मींट सूं देख्यो। म्हनै लाग्यो कै बींरै गळै रो रंग नीलो है। जाणै सगळो जहर कंठ में भेळो कर राख्यो है। बो सगळो जहर जिको लारलै च्यार बरसां सूं उणरै गळै में उतरण नै लाग्योड़ो हो।

म्हैं उठै रुक नीं सक्यो। बारै निकळतां–निकळतां अेकर पूठ फेर र नीलकंठी नै निजर भर र देख ली अर पछै उणरी निजर सूं अदीठ हुयग्यो।

❖ ❖ ❖

Scanned by CamScanner

काच रो चिलको

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

गवरली जियां ई आभै कोनी जोयो बियां ई बींरी दीठ अेक गिरज माथै पड़ी। गिरज खासा टणको हो। देखतै पाण ई गवरली रै डील मांय सी कंपा-सी बड़गी। अेक सून बापरगी। बा बेगी-सीक उठी अर डागळै रै माथै लकड़ी री बणी मैड़ी रै मांय बड़गी।

काच री खिड़की सू जोवण लागी। गिरज अेक झपाटो मारतो हेटै आयो अर भींत माथै सूं अेक मरयोड़ो ऊंदरो लेय र पाछो आभै में गमग्यो। गवरली नै काठ मारग्यो। औ ऊंदरो कठै सूं आयो ? अचाणचक बींनै याद आयो कै औ ऊंदरो बींरी गळी मांय सूं कागलो उठाय र लायो हो।

बा ऊंदरै बाबत फेरूं सोचण लागी। बो ऊंदरो बींरै घर आगै रमझोळ मचावतो हो। कदैई गोखै में आवतो अर कदैई चौकी माथै। आपरी मस्ती में रैवतो।

अचाचूक अेक गंडक ताक लगावतो बीं माथै झपट्यो। पंजै री अेक ई चोट में ऊंदरो राम नाम सत हुयग्यो। बीं बगत ई अेक छोरै उठाय भाटो गंडक रै मूंढै माथै मार्‌यो। गंडक रोवतो नाठ्यो। इणगी गंडक नाठ्यो अर उणगी कागलो ऊंदरै नै आपरी चूंच में झाल र उड्यो।

बो डागळै री भींत माथै बैठ र चूंच सूं बींरो डील चूंटण लाग्यो कै गिरज झपाटै में खोस लेयग्यो।

कित्तो डरावणो गिरज हो !

पतो नीं, बींनै गिरज री ओळूं आवतै पाण आपरो धणी, सासू अर देवर क्यूं याद आय जावै। बींनै लाग्यो कै गंडक बींरो देवर है, कागलो बींरो धणी अर गिरज बींरी करकसा जामण।

ऊंदरो ? ऊंदरो कुण ? ....बा खुद !

गवरली मैड़ी सूं बारै आय र तावड़ै बैठगी। तावड़ो सुहावणो लाग्यो। माघ रो महीनो हो। च्यारूंमेर धोरां सूं घिरयोड़ै चूरू में हाडां नै धूजावण वाळी डांफर बाजै।

गवरली नै लखावै कै औ घरवाळा बींरै लारै पड़्योड़ा है, ठीक बियांई जियां कै ऊंदरै रै लारै पड़्योड़ा है गंडक, कागलो अर गिरज !

गवरली अेक फूटरीफरी छोरी ही। घणी ई सुहावणी अर सुभाव री चोखी। बाळपणै सूं ई बा भावुक ही। जिंदगी रा मोह भरया सुपना देखती। आपरै घर अर धणी नै लेय र बीं कित्ताई गढ़-कंगूरा बणाय लीना। जैसाणै री बा छोरी आपरी भोम री मूमल जैड़ी प्रेम-दीवानी री भावुकता लियोड़ी ही। केई बरस उज्जैन में गाळ्या। शहरी सभ्यता अर परिवेश नै अपणायो। पण बाप घणो ई गरीब। बापड़ो मामूली चाकरी करै। च्यार सौ रिपिया कमावै। इण सूं घर रो खरचो ई सावळ नी धिकै। तीज-टांकड़ै रो खरचो अखरै। मांदगी में तो हाथ साव ई तंग हुय जावै।

बाप मांदो-मांदो-सो रैवै। मां सूख र कांटो बणगी। ऊपर सूं गवरली रो मोट्यार हुवणो रातां री नींद खोस ली।

अेक दिन गवरली रै बाप आपरी घरवाळी नै कह्यो – सुण गवरली री मां, छोरी तो अेकदम स्याणी दीसण लागगी।

–छोरी चंद्रमा ज्यूं बधै....।

–पण ?

–इ्णरा हाथ तो पीळा करणा ई पड़ैला।

–तूं सही कैवै। पण छोरी नै परणावण सूं पैली कीं टका-पइसां रो भी तो बंदोबस्त करणो पड़ैला। बातां सूं तो छोरी फेरा नीं खावैली। खाली नाक-कान ढकण वास्तै ई दो-च्यार हजार रिपिया चाइजै।

–आ तो म्हैं ई जाणू। मां बोली – पण बेटी तो राजा रावण रै घर में ई नीं खटाई, जद कै बींरै कनै सोनै री लंका ही।

–जिको करमां में लिख्योड़ो है बो इज हुवैलो। बापू बोल्यो। थोड़ा-सीक दिनां में गवरली आपरै माईतां री चिंता समझगी। स्याणी अर समझणी छोरी इण जथार्थ नै ई जाण लियो कै बाणियां रै लोभी समाज में गरीब छोरी रा हाथ पीळा हुवणा घणाई दोरा है। औ धन सूं धायोड़ो भूखो समाज है। दायजै में अणूतै नकद नारायण री बातां करै। फेर ?

बा मोकळा दिनां तांई सोचती रही अर सेवट उण औ निश्चय कर्‌यौ कै बींनै आपरै मां-बाप अर छोटा-छोटा भाई-बैनां खातर अेक नुंवैं जीवण री शुरुआत करणी चाइजै। कमर कस र कमावणो चाइजै। छोरी हुवतां थकांई छोरै री गरज पूरी करणी चाइजै। उण आपरा विचार मां-बाप सांम्है भाख्या। मां-बाप री आंख्यां फाटगी। इण छोरी रो माथो तो नीं खराब हुयग्यो ? आ फूटरीफरी छोरी जलम-भर कंवारी रैवैली ? छोरै ज्यूं कमावैली ? बाप कड़क र बोल्यो – छोरी ! अणूती बात मूंढै सूं निसारतै सोच्या कर।

मां मैणा देवती बोली – आ छोरी कदै-न-कदै धोळां में धूड़ घलावैली।

गवरली नै लाग्यो कै उणरा मां–बाप साव जूनै खयालां रा है। उणा में सांच रो सामनो करण रो काळजो कोनी। ....फेर तो रात–दिन गवरली माथै टुणका नांखणा शुरू हुयग्या। सेवट गवरली आपरै होठां रै टांका लगाय लीना। संजोग सूं अेक छोरो मिलग्यो। चट मंगनी पट ब्याह कर काढ्यो। गवरली नै सासरो चोखो नीं मिल्यो। धणी जुवारी। विधवा सासू भाटै ज्यूं करड़ी। बात–बात माथै अेक ई मैणो देवै – थारै आवतां ई घर रा तीन डांडा हुवण लाग्या।

देवर बींरै फुटरापै माथै कोजी दीठ राखै। अेक दिन गवरली आपरै देवर छगन नै कूट काढ्यो। बीं हांचळ में हाथ घाल्या। गवरली आखै घर में ऊधम मचा काढी। दारू पीयोड़ो धणी आयो तो सगळा जणा मिल परा बापड़ी गवरली नै जंतराई। गवरली आपरै बाप नै उज्जैन कागद नांख्यो। कोई पडूत्तर नीं आयो। फेरूं कागद....। दो–च्यार कागद फेरूं पण कोई पडूत्तर नीं आयो। जाणगी कै वै सैंग बीं खातर मरग्या। फेर तो गवरली रा दीन घणाई खोटा हुया। तीनां रो जुलम सहतां–सहतां बापड़ी पीळी पड़गी।....

आज ऊंदरै री दशा देख परी बा ऊंडै विचारां में डूबगी। बा भी तो उण ऊंदरै जियां है। अेक दिन तो बींनै मरणो इज पड़सी। इण जूण सूं छुटकारो पावणो इज पड़सी। तीखी डांफर उणरै डील सूं आथड़ी। वा चिमकगी। पगोथियां पासी जोयो तो उणरो देवर होळै–होळै मुळकतो दीस्यो। बींरै उणियारै माथै नाग घूमै हा।

वा उणरी नीयत पिछाणगी। देवर अगाड़ी आय र कह्यो – तूं म्हारो कह्यो मान लै तो म्हैं थारी जिंदगी बणा देसूं। थारै च्यारूंमेर सुखां रा डेरा लगा देसूं।

–म्हनै सुख नीं चाइजै। तूं थारो रस्तो लै !

–मान जा, नीं तो थारै हाडां रो आज चूरमो करा देवूंलो। देवर धमकी दीवी अर थोड़ोक नेड़ो आय र बींरो हाथ झाल्यो। गवरली फड़ाक सूं अेक थप्पड़ मार्‌यो। देवर दांत पीसतो गयो परो। बी बगत ई अेक घायल कबूतर बींरै खोळै में आय र पड़्यो। उण देख्यो – अेक बाज हो। तूफानी गति सूं मंडरावतो बाज ! गवरली घड़ी–घड़ी कदैई बाज नै अर कदैई कबूतर नै जोवै। फेरूं बींरै हिवड़ै में उथळ–पुथळ मचै। मुगती रा हेला असवाड़ै–पसवाड़ै गूंजै। बा घड़ी–घड़ी सोचै कै बाज रै पंजां मांय सूं कबूतर छूट सकै....मौत रै मूंढै सूं नीसर र जीवण पा सकै. ....फेर बा क्यूं नीं ?

गवरली रो उणियारो गहर–गंभीर हुयग्यो। उण बठै नीं रैवण रो निश्चय कर्‌यो। बा अठै सूं जासी। बंधण मुगत हुसी। आपरी नुंवी जिंदगी सोधसी। आपरै ढंग सूं जीसी।

गवरली ऊभी हुई। उण इणगी–बिणगी जोयो। गहरो सरणाटो हो। बा हेटै उतर परी धुरी मोड़ै सूं बारै निसरगी। बींरै मूंढै माथै काच रो चिलको पळकै हो।

❖ ❖ ❖

भारमली भाजी कोनी

रामकुमार ओझा 'बुद्धिजीवी'

किरत्यां मथारै आयगी। चांद खितिज–सागर में कूदग्यो। रात रो दूजो पोहर बीतग्यो। पोहर बीततां पपीहो बोलैला। अर भारमली नै औ घर, औ गांव छोड र जावणो हुवैला। चूड़ीवाळो हू–ब–हू पपीहै री बोली बोलै। बा चकोरी ज्यूं उणसूं बंधी चली जावैला।

नींद तो आई ई कोनी। काळजो मथीजतो रह्यो। भारमली, तैं औ कांई कर्‌यो। थारो आचरण गांव खातर मरजाद री सींव। पंच–प्रधान पंचायत बीच थारी साख धरै। पण दिनूगै ठाह पड़्यां आखो गांव थारै नांव माथै थू–थू करैला। मुकरजा भारमली, अजैई बगत है।

बा ऊभी हुय मांची माथै बैठगी। अबै आभै में चांद नीं हो। अथाग गगन सागर में डूबग्यो हो। चूड़ीवाळो इज कैवै हो – भारमली, म्हैं डूब मरूंलो जे तूं म्हारो साथ नीं दियो।

उण भलै मिनख रो कांई दोस ? म्हैं ई बेल नाळ ज्यूं बधी अर उणरै चौफेर जाय लिपटी। न हाण देखी न जोड़ी परमाण। बा उठती जवानी री मौज अर म्हैं भटकती लहर। औ तो नित–नेम सूं जीवण बीतावती आई जणा डील रो उठाव नीं ढळ्यो। उमर रो ठाह नीं पड़्यो। भोग सूं डील छीजै। पण म्हैं तो दस बरस री ही जणा रांड हुय र बैठी। ब्याह हुयो हुवैला कदैई। पण म्हैं कद जाणी ? चूड़ी फूटण रै सागै बरजणा–बरकणा शुरू हुई। सासू–सुसरा पांडु मिनख पण जेठ दारूड़ियो। बींरी लुगाई रोगली। उणनै मारतो–कूटतो अर म्हारा लाड–लडावतो। पण होश संभाळण रै सागै ई म्हैं उणरी नीयत पिछाणगी। अेक इसी ज रात बो दारू रै दौर में आयो। बींरा पग डगमगावै हा। म्हैं सावचेत ही। भाज छूटी। जावती–जावती उणरै माथै डावोड़ै पग री जूती ई ठरकाई। भारमली आपरै भीतर उठती आवाजां नै पडूत्तर दियो।

तद री आई भारमली बाप–दादै रै गांव री कांकड़ नीं तोड़ी। कदैई खोड़ नीं लागण दी। पण सासरै दांई पीहर में ई मिनखां रो तोटो। फगत आंधी मां अर

दमै सूं जकड़ीज्योड़ो बाप। इण हालत में उणनै मरदजात ज्यूं जीवणो सीखणो पड़्यो। बाप–दादै री घर–गुवाड़ी अर खेत–बाड़ी संभाळी। गांव–गळी में आपरी मरजाद कायम करी। बगत–जरूरत लोगां रै काम आवती । आयै–गयै जात्री नै पाणी पावती। घड़ी–अधघड़ी सुस्तावण रो कैवती। इणी नैम रै चालतां अेक दिन जद हारयो–थाक्यो, लू–लाय रो मार्‍यो चूड़ीवाळो उणरै नीम हेटै आय बैठ्यो तो भारमली उणरी रिछपाळ करी। लांबो–डीघो, गोरो निछोर ! नुंवी कचनार कूंपळ दांई जेठ री लाय में कुमळाइज्योड़ो मूंढो। बठै नेठाव सूं बैठ र पाणी पीवण रै सागै ई डहडहाइजग्यो। छोरो आपरी काठ री पेटी माथै ऊंचाय बहीर हुयो। भारमली किंवाड़ री चौखट झाल्यां जोवती रही। उणरै मांय सूं कोई बोल्यो –चेत भारमली !

भारमली बार–बार चेतणो चाह्यो पण उणरै मांय सूती लुगाई अैड़ी जागी कै फेरूं बींनै चैन नीं पड़ी। मांय–रो–मांय प्रीत रो गूमड़ो पाकण लाग्यो। छोरो माथै पेटी ऊंचायां गळी–गुवाड़ हेलो पाड़तो – चूड़ीवाळो....चूड़ी ले लो....रंग–बिरंगी चूड़्यां ! भारमली हेलो सुणती अर आपरी सूनी कळाइयां नै हेरती। गोरा हाथ चूड़ी बिना उणनै आपरा नीं लागता। उणनै लखावतो कै अै किणी दूजै रा हाथ है। उणरै हाथां तो चूड़्यां ओपै।

बापड़ो छोरो बिखै रो मार्‍यो है। रोज आवै अर उघाड़ी धरती माथै सूय जावै। भारमली उणनै मांची देवण लागी। मुफत री रोटी खावण सूं छोरो मुकरग्यो तो भारमली बात राखी – थारी कमाई में तूं म्हारो सीर घाल लै।

छोरो रोटी खावण लाग्यो। पण भारमली रै मन में ऊभ–चूभ। रोट्यां कम खावै, कमाई ज्यादा करै। अेक दिन सिंझ्या भारमली बोली – दिनूगै म्हैं बढई नै बुलाय र थारै सारू रेहड़ी बणवाय देवूंला।

–पण पइसा ?

–थारी कमाई रा है रे। म्हैं कोई म्हारी गांठ सूं थोड़ी खरचूं। किरत्यां औरूं ऊंची आई। भारमली नै ई पेलै दिन री बात चेतै आई। छोरो बोल्यो – म्हारै कनै भांत–भंतीली टिकाऊ चूड़्यां है। बा अेक जोड़ी तूं ई पैर देख तो सरी....।

उणरी भोळप माथै भारमली मन में दुखी हुवता थकांई मुळकी। बत्तीसी री आब बिखेरती–सीक बोली – धत् ! तूं जाणै कोनी। जा, किणी दूजी ठौड़ बेच।

बा मांची सूं उठी। तारा खिंड–खिंड पड़ै हा। कदास बींरी हंसी तो नीं उडावता हुवैला। ऊं हूं ! तारा बापड़ा उणी रै उनमान भोळा–ढाळा। बो तो थारै मन रो पाप है जिको मुळकै।

भारमली जिको कीं तेवड़्यो, सदा पूरो कर्‍यो। आज तांई किणी नै धोखो नीं दियो तो आज क्यूं देवै। समाज मन मार बैठणवाळी नै सरावै पण मन री मुराद पूरी करै उणनै छिनाळ बतावै। म्हैं कठां तांई धाई भूंडी मरजाद सूं। करतार रंग–रूप दियो। अरमान दिया। उणानै रेत में राळ परी परमात्मा रै सांम्है कांई

उथळो देवूंला ?

उण आपरै मूंढै माथै पाणी रा छाबका दिया। दीवो चास्यो। पटी खोली। दरपण काढ्यो। कांगसी थामी। बाळ संवार्‍या। माथै हींगळू री टीकी लगाई। पछै बाखळ में आई। भींत रै सहारै ऊभी चमेली री बेल बींनै झाल, देवती–सी लागी। लोटो भर पाणी उणमें सींच्यो। चमेली भायली ! इतरा दिन म्हैं म्हारै दम–खम सूं जीवती रही, अबै थनै जीणो है। नीम रा पत्ता झड़–झड़ पड़ै हा। औ कांई बसंत रुत में झड़ाण ? इणी बगत मन रै मांय सूं फेरूं कोई बोल्यो – रुत परमाण नीं, अवस्था परमाण झड़ाण शुरू हुवै। जाणै, औ नीम थारै बाप रै सायनो है।

–अर म्हैं ? भारमली नै लखायो जाणै बा खुद नै कोई बात पूछै ही।

पण म्हैं अकन कुंवारी समान। म्हारै मांय रो रस कद सूख्यो ? हां, पाळो जरूर पड़्यो। अबै पाळो छंट्यो है तो हरियावणो इज चाइजै। देख, तूं जिकी सोकन म्हारै मांय सूं बोलै है नीं, म्हारो रूप देख। उण फेरूं दरपण झाल्यो। दीवै रै उजास मांय आप ऊपर आप इज मोहित हुवती रही। उणरो अंग–अंग टूटै हो। उण आळस हाथ ऊपर कर्‍यां कांचळी फाटबा–सी लागी। माथै केसां री लट झूलण लागी। पण धक् ! छाती में धमीड़–सो लाग्यो।

भारमली, औ कांई ? औरूं देख। साची है कै कूड ? नेठाव सूं देख। कितरा धोळा बाळ – अेक–दो–तीन....। आज तांई देख्या ई कद हा। कांई गिणती है आंरी। बा आज तांई पाणी में मूंढो देख र केस बांधती रही। दरपण बरसां सूं पेटी में ई पड़्यो रह्यो।

भारमली मांची माथै पसरगी। उणनै लखायो जाणै चूड़ीवाळो ऊभो उणनै हेर रह्यो है। केसां में आंगळ्यां फेर रह्यो है।

रात रै अंधारै में हकीकत सूझै कोनी। आज तांई उण म्हनै भर निजर देखी ई कद। दूर सूं देखा–देखी चालती रही। बातां–ई–बातां मांय भाजण री तेवड़ीजगी। दूर जावणो जरूरी। गांव री कांकड़ में सत भंग नीं करूंला। देख रे, तूं दूर जाय र मांग भरजे।

–पीऊ....पीऊ....पी कठै ? पपीहो बोल्यो। किरत्यां गमगी। तारा ठीमर हुवण लाग्या। भारमली सूं उठीज्यो कोनी। पपीहो दूर बोलतो–बोलतो हारग्यो तो नेड़ो आवण लाग्यो। पुकार में दरद घुळतो ई गयो।

भारमली निढाळ हुयगी। पी–पी री पुकार बेगी ज तकरार में बदळगी। हाण परमाण हेत चाल्या करै। बेओपता जोड़ा छेकड़ भूंडीजै। मानी प्रीत आंधी हुवै पण धोखो नीं देवै। भारमली देख....तूं, रात रो तीजो पोहर अर बो खिंडतो चांद ई अंधारै में भटक र मरसी। जिकी चाह जागण सागै पिछतावो ई जागै, बा चाह नीं, छळावो हुवै। अैड़ी चाह मिटै ई वेगी। तूं उणनै जावण दै।

होळै–होळै पपीहै री आवाज थमगी। कुत्तां री भूंस सुणीजण लागी। भारमली मांची सूं उठर कोठै मांय गई। कांचळी में कीं दबायो अर भींत सहारै आयं र ऊभगी। उण आपरै मांयली लुगाई नै मारण में कीं कसर नीं छोड़ी ही पण अबार वा भींत फोड़ भाजणो चावै ही।

अचाणचक भींत रै दूजी कानी चूड़ीवाळै रो मूंढो दीस्यो। बो होळै–होळै झाला देवतो कैवै हो – आ भारमली अबार गाडी आवणवाळी है।

–बीर तूं जा। म्हैं थारै जोगी कोनी। देख म्हारै....। अर भारमली आपरी लट खोल र दिखाई।

चूड़ीवाळो खड़–खड़ हंस्यो जाणै रात जागी हुवै – विधवा लुगाई पचीसी आवता थकां ढळती मान लेवै। अंधारै में काळां रै बिचाळै धोळा ई लखावै। जे तूं संयम सूं डील संभाळ राख्यो है तो पैंडो चालतां म्हारो डील ई गळ्यो कोनी। म्हैं ई कोई अकन कुंवारो कोनी। म्हारी पारो म्हनै दगो देय र रामप्यारी हुयगी। म्हैं उणरै उनमान थनै देखी तो दिल दे बैठ्यो।

–नीं रे, कूड़ नीं बोल। संभाळ थारी कमाई री बचत।

–तूं फंटवाड़ो करै तो थारी मरजी। पण म्हैं तो थनै....। अर बीं हाक देखी न बाक, भारमली री कळाई झेल र चूड़्यां पैराय दी।

भारमली नाड़ ऊंची कर उणनै भर निजर हेरयो। बा बोली–आ, भीतर आ। अबै म्हैं भाजूं कोनी। तूं अंधारै में चूड़ी पैराई, आ थारी भूल है। म्हैं तो दिन रै उजास मांय मांग भरावूंला। देखूं, कुण पालै म्हनै !

❖ ❖ ❖

Scanned by CamScanner

कांचळी

रामेश्वरदयाल श्रीमाळी

गाडरां जैड़ा धोळा केसां री बिखर्‌योड़ी लट सूं झूंपै रो उळझ्योड़ो खींपड़ै रो तिरणो पोपली आंगळ्यां सूं काढ, हाथ में अंगरेजी बांवळियै रो बांको चिटियो लेय, खाड़का पैर र डोकरी समधा बारै निकळी। झूंपै रो फळो बीड़ र भंडारियां री दुकान सांम्हीं चाली। झीर–झीर हुयोड़ो गोडां लग रो घाघरो अर लीर–झाण हुयोड़ो ओढणो। ओढणो घणो मैलो नै जूनो, जिको रंग रो ई कीं ठाह पड़ै नीं। अेक पल्लै में संभाळ र राख्योड़ा जुंवार रा दाणा।

झूंपै सूं बीसेक पग माथै हणमानजी रो थान। कीड़ी री चाल डोकरी चिटियो हिलाती थान तक पूगी। थान कनै जाय र धोक दी। जुंवार रा च्यारेक दाणा पेड़लै माथै बिखेर र डोकरी पाछी झूंपै सांम्ही वळी। मेरणो उघाड़्यो। खाड़का उतार्‌या। चिटियो खूंणै में ऊभो कियो। धान संभाळ र पाछो मटकै में घाल्यो। मटकै माथै ढक देय र झूंपै बारै नीसर गवाड़ी में छाटी–सीक नीमड़ी री नाजोगी छींया में बैठगी।

ऊनाळै री रुत। हवा बंद। तपत घणी। नीमड़ी रै नीचै अेक लांबो–लड़ाक कुत्तो पड़्यो जोर–जोर सूं सांस लेवै। कूतरै नै धुतकार र चिटियो सांम्हो कियो, पण कूतरो किणी रिश्वतखोर बाबू ज्यूं निसरड़ो हुय, जिको डोकरी री धुतकार नै धार्‌यां बिना ई चुपचाप आंख्यां मींच र पड़्यो रह्यो। डोकरी में घणो सत कठै ? बा पण अेक कानी पसरगी।

समधा मन नै समायो–म्हारै कांई बाई ! म्हारै तो कोई धियो न कोई पूतो। म्हारै अठै कुण है जिको बै पाछो देवै। कदेई करमां छाछ रै छांटै रो काम पड़ै, जिको ई दोरो घालै। ....नै लारै जुंवार रही ई कठै बाई। अैड़ी माणो भरी हुवैली तो दस–पनरै दिन नीठ चालैली। पछै किणरै मूंढै सांम्ही जोवणो ? पोपली मुंढो कर र किणरै सांम्ही हाथ पसारां बाई ? जिण पांतर तो पुसबाड़ी नै बैंत कांचळी रो कपड़ो नईं दियो, नै सात सुख ! समधा अेक निराशा भर्‌यो सैरको नांख्यो।

समधा सूती पण मन नै जक कठै ? कांई ठाह छोरी हेजाळी है, लाण माथै हाथ फेरावण नै आई तो कांई हुवैलो ? जे खाली हाथ फेरूं तो भूंडो कोनी लागै ?

भूंडो तो बाई लागै ईज ! समधा रांड तो कांई हुयो ? घर में कोई कमाऊ कोनी पण रोट्यां रो देवाळ तो द्वारका रो नाथ है। दाणै–दाणै माथै खाणैवाळै री छाप उण लगाई है। मन तो लोभ करै ईज ! मन रो कांई – मन लोभी, मन लालची, मन चंचळ, मन चोर ! पण मन रै मतै थोड़ो ईज चालीजै।

चिटियै रो सहारो लेय र समधा उठी। रेत झटकण घाघरै माथै हाथ झटक्यो। झूंपै में गई। फाट्योड़ै ओढणै रै पल्लै में घणै जतन सूं जुंवार भरी। च्यार–छह दाणा बिखरग्या हा, उणानै अेक–अेक कर चुग्या। अन्न देवता है। देवता नै पगां में कियां बिखेरां बाई ! सूझतो थोड़ो हो जिको जमीं माथै हाथ फेर–फेर नै सावळ जोयो। दो–च्यार कांकरां नै ई जुंवार रै भरोसै घाल्या। मूण माथै ढक दीनो। फळो ढक र दुकान कानी जावण बारै नीकळी जद संतोख रो अेक टुकड़ो मूंढै माथै उतर्‌यो – लाण पुसबा नै बैंत कांचळी तो देवणी ज चाइजै।

जोग री बात, डोकरी री आंख्यां डबडबायगी। अठै चाइजै जिको बठै ई चाइजै। नींतर नरबदा रै कोई जावण रा दिन हा ? कितरी भली ही लाण ! बोलती जरै फूल खिरता। जेठाणी–जेठाणी कैवती जीभ सुखावती ही लाण ! अंग में आळस रत्ती–भर ई कोनी हो। आखै दिन घोड़ै दांई दौड़ती फिरती। फगर–फगर काम करती। सगळां सूं बणाय र चालती। फूटरीफरी ! गीत–गाळ में हुंसियार ! पण इसा मिनख ओछा दिन लिखाय नै लावै ! अेक दिन ताव आयो, नै जाणै ही–क ही ई कोनी ! सपनैवाळी बात बणनै रहगी। उण दिनां पुसबाड़ी पांचेक बरसां री हुवैली। हरनाथ म्हारै खोळै में नैनकड़ी लट नांख नै कह्यो हो – भाभी, बापड़ी अबोली जिनवार है, हमैं थे जाणो। म्हैं तो थांनै सूंप र....। कह परो गळगळो हुय र रोवण लाग्यो।

सळ भर्‌योड़ै पोपलै मूंढै माथै मुळक री अेक रेख बिखरी। कैड़ी म्हारी छाती रै चिप र छानी रही ही। जाणै सागी ई मां होवूं। औ ई कोई आगोतर रो लैणियो हुवै है। म्हारै साथळ नईं फाटी तो कांई, सांवरियै रै औरतो पूरो करवावणो हुवै तो...चेहरै माथै उदासी री अेक बादळी ऊमटी अर बिना बरस्यां ई मारगै बुही। निपूती हुवण री बात सूळ हुवै ज्यूं चुभी। बाळ–विधवा ही लाण !

अबै पुसबा कैड़ी फूटरी दीसै। कपड़ो–लत्तो कैड़ो ओपै, जाणै इन्दर री अपछरा ! गाल कैड़ा गुलाबी पड़्या है, लोही जाणै हमैं टपकै कै हमैं टपकै ! चेहरै माथै नूर आयग्यो ! मूंढो जाणै देखो तो देखता ईज रैवो। च्यार दिनां पैली लटां में जुंवां रा माळा टिरता हा। म्हैं कह–कह नै थाकगी–अे पुसबाड़ी रांड, थारै इतरी–इतरी जुंवां टिरै। आव, माथो परो धोवूं। कैड़ो मैलो चिकार हुयो है। कपड़ा पैरती तो जाणै खूंटै रै परा टेरिया हुवै ज्यूं। पग री ब्याउवां सूं लोही बैवतो। पण हमैं ? ...बगत–बगत री बात है।

पायली जुंवार देय र डोकरी समधा बैंत भर्‌यो तापेटै रो टुकड़ो लाई। कांई करां बाई ? बाणियै रो बेटो, लेतां ई खाय नै देतां ई खाय। नींतर पायली धान

रो रोकड़ो रिपियो हुवै, अर आगलै जमानै में रिपियै रो तो घाघरो आवतो–पूरो अस्सी कळी रो ! पण इण जमानै रो कांई करणो ? मिनखां मांयलो तो राम ईज परो निकळ्यो है। पण राम तो लेखो राखै है। आगलै भव में....।

तावड़ो कीं मोळो पड़्यो। पुसबा हाल नीं आई। नैना टाबरां री मां है लाण, बगत ई कोनी मिळ्यो हुवै। नींतर उणरो जीव तो अठैई पड़्यो हुवैला। छोरी लाण लायकी वाळी है। कांई ठाह औ विचार नै ई नईं आई हुवै कै धा रो अणूतो ई रिपियो खरच परो हुवैलो; कै कांई ठाह माथै हाथ फेरावण जावूं तो डोकरी खाली हाथ पाछी मेलण सूं लाज मरैली। डोकरी रै अठै कमावणवाळो कुण है ? अणूता ई फोड़ा घालणा ! भला मिनखां रा औ ईज लक्खण है। मिलण नै तो अठै आई जरै मिली ज ही–क ! खिणेक रो ई मिलणो अर दिनां रो ई मिलणो। जावूं, कांचळी बैंत बटका जोगी तो बा ई है परी क ! थो–थो, रामजी मा'राज, मां जिसी ई लायक हुवै। सुहागभाग अमर रैवै। पीळो ओढै, मीठो जीमै। पेट ठरै लाण रो। रामजी मा, राज, घणो ई दुख देख्यो है। सैंग दिन किसा सिरखा रैवै बाई ! अबै रामजी भला दिन देवै। लाल तापेटै रै पाव गज कपड़ै नै सामट–संभाळ नै डोकरी पुसबा रै घर कानी चाली। तांगिया खाती, आपरी जाण खाताई में।

मिनखां नै तो किणरो ई सुख सुहावै ई कोनी बाई। हरनाथ रै गरीब घर नै देखतां किणनै ठाह हो कै छोरी नै अैड़ो घर–वर मिळैलो। पण रामजी सगळां रा ई दिन फेरै। मिनख भूंडियां कर–कर र जात रो ई मैल धोवै। जान आई जरै ई कच–कच शुरू। मोटो जोयो बाई। तीजियांत है बाई। पचास बारै ऊमर है बाई। मिच–मिचियाती आंख्यां, थुलथुलो डील है बाई। गाबड़ धूजै बाई। कोरो धन ईज देख्यो है बाई। सुवाग कोनी देख्यो। बाप आपरो घर भर्‌यो बाई। बेटी रो सुख कोनी जोयो। मूंढै जितरी ई बातां। म्हैं कैवूं, आपो–आपरा नसीब है। छोरी लाण आखी ऊमर में हमैं ईज सुख देख्यो है। इणसूं वत्तो घर–वर कांई देखै बाई। चोखी घर–गुवाड़ी। भण्यो–लिख्यो बींद। गांव में लेण–देण रो धंधो। च्यार–च्यार गायां–भैस्यां दूझै। ताकड़िया सोनो तुलै। इणसूं वत्तो पछै कांई देखै ? सुवाग–भाग तो भगवान रै हाथ में हुवै। मिनख बापड़ै रो कांई इख्तियार ? ऊमर तो भगवान री घाल्योड़ी हुवै, नींतर सूरजड़ी नै देखो क्यूं नी, परणी नै डेढ महीनो ई कोनी हुयो, नै नसीब फूटग्या। मां–बाप जोध–जवान हीरो हुवै जैड़ो वर जोयो; जाणै राजकंवर ! पण भाग में नीं लिख्योड़ो हुवै जद कांई हुवै। नै आ पुसबाड़ी, मिनख बूढो–बूढो कैवता पण आंगणै दो–दो रतन रमै। चींघड़ हुवै जिसीही पण राज करै !

डोकरी हरनाथ रै घर रै नेड़ी पूगी। आसरै सूं जंवाई नै नेड़ो जाण घूंघटो काढ्यो। ओरणै री च्यार आंगळ पट्टी आंख्यां रै माथै टिरगी। फाट्योड़ी माथावटी सूं चिट्टा बांध्योड़ा धोळा केस ऊघड़ग्या।

पुसबा सासरै सारू बहीर हुवै ही। अेकण पसवाड़ै पावणा ऊभा। पचास बारै ऊमर पण शौकीनाई में अव्वल ! परमसुख धोतियो, टेरेलिन रो झब्बो। सोनै

Scanned by CamScanner

रा बटण लाग्योड़ा। काची मीमरी थकी आंख्यां माथै काळो चश्मो। हाथ में राजवियां वाळै दांई काम कियोड़ी चन्नण री छड़ी। आपो–आपरा नसीब ! डोकरी आपरै साद नै थोड़ो ताबै कर होळै–सीक कह्यो – बेटी, पुसबा बेटी !

पुसबा आपरो सामान बैळकी में रखवावती ही। उणनै डोकरी रो हेलो गिनारण री फुरसत ईज कठै ? सगळा नग अेक–अेक कर र सावचेती सूं गिणै। जे कोई सामान लारै रहग्यो तो इणां रो सुभाव ईज बाळणजोगो है। पैरण–ओढण में, खावण–पीवण में कितरो ई खूटो, मूंढै मांय सूं हरफ ई कोनी काढै, पण नुकसाण अेक रत्ती रो ई दाय कोनी आवै। अेक–अेक सामान गोख–गोख नै याद करै।

डोकरी थोड़ी ऊतावळी थकी बोली – पुसबाड़ी ! हां अे बाला, सुणै ई कोनी अे !

पुसबा रो च्यार बरस रो छोरो डोकरी नै देख र चमक र रोवण लाग्यो। छोरै नै रोतां देख र पुसबा डोकरी रै सांम्हो जोयो। मन में विचार्‌यो – डोकरी कीं रिपिया–पीसा मांगण आई हुसी। घर–धणी घणा दोरा कमावै। रिपिया किसा रस्तै में पड़्या लाधै है, बाई ! सुर में थोड़ी खीज भर र कह्यो – कांई कैवै है, धा!

समधा चिटियै रै सहारै ऊभी हुय र हाथ हिलाय ओळभो देती थकी बोली– हां अे बाला, तूं तो माथै हाथ फेरावण नै ई कोनी आई अे ! सासरै जाती नै मिजाज आयो बाई तनै तो। कैवतां–कैवतां सुर गळगळो हुयग्यो। आंख्यां रा कोयां में कोड सूं आलास छायग्यो। पोपलै मूंढै सूं हंसती–हंसती घणै कोड सूं लायोड़ो बटको सांम्हो कियो।

पुसबा देख्यो, लाल तापेटै रो बैंत भर्‌यो बटको। औ अैड़ो हळको कपड़ो फेर कुण पैरैली ? आज रै सुख में लारला दुख रा दिन कणनै याद रैवै ? डोकरी रै कोड नै धन बावळी पुसबा कोनी परख सकी। उणरो दोस ई कांई, पीसावाळां री डीठ में हर अेक बसत रो मोल पीसां सूं आंकीजै। पुसबा री डीठ में बैंत कपड़ै री कीमत आठ आनां सूं बेसी अेक पीसो ई कोनी ही अर माथै मण भर्‌यो पहाड– हरनाथा ! थारी छोरी नै आवै जितरी ई बार कांचळी दे नै भेजूं !

रूखै सुर सूं कह्यो – हमैं इणनै लाय नै क्यूं तकलीफ देखी धा ! म्हारै अठै औ तापेटो कुण पैरैलो ?

डोकरी रै कानां में जाणै उकळतो तेल पड़्यो ! भावना रै गिगनां सूं हेठी ठोकीज बा चितबंगी हुवै ज्यूं हुयगी। उणनै एहसास हुयो, बा गरीब है, उणनै सावजोग कपड़ो कोनी जुड़ै। पुसबा जैड़ी अमीर घर री बहू नै बैंत कांचळी देवण रो उणनै कोई हक कोनी !

समधा रा पग चिपग्या। पाखाण–पूतळी हुवै ज्यूं बा बठै ईज ऊभी रही, ईश्वर रै मांड्योड़ै व्यंग्य चितराम ज्यूं !

❖ ❖ ❖

राजीनांवो

विजयदान देथा

ऊमर परवाण जूण रो खरड़ो छिण, पल, घड़ी, दिन, मास अर बरसां तळै ओटीजतो जावै। पण कदैई–कदैई ठेठ बाळपणा री कोई बात आखी ऊमर नीं कझलाईजै ! भोभर तळै यूं–री–यूं जगामग करती लाधै। आज तो म्हैं अेक लेखक री मरजाद निभावूं, पण वां दिनां तो फगत कोरो–मोरो पाठक हो। बांचण जोग कोई पोथी हाथै लागी नीं अर डकळ–डकळ आंख्यां सूं पी जावतो। कदास नवीं क्लास में भणतो, वां दिनां री बात है। म्हैं खुद तो घरै ई रैवतो पण बाळगोठियां सूं मिळण रो उमायो दूजै–तीजै दिन चारण–बोरडिंग रो भळाको अवस दे आवतो। सुभाव तो सगळा ई टाबरां रा न्यारा–न्यारा हुवै पण रणसीगांव रो आसकरण अेक अजब ई ओपरा सुभाव अर ओपरी बणगट रो हो। मतीरा ज्यूं गोळ सफीट माथो। लांबी चोटी। धुगधुगो डील। खीलां–ई–खीलां रुधोड़ो गोळ मूंढो। मीचरी–मीचरी आंख्यां। जाणै पाचणा रो चीरो देय मांय बैठाणी हुवै। किणी सूं ई अणूती ओळखाण नीं। अेकलखोरो। बतळायां जरूर–परवाण नीठ बोलतो। आपरै ई दंद–फंद में अळूझ्योड़ो। मन करतो जणाई अेक भळभळातो काच मूंढागै धर लेवतो अर हाथां रा लटका करनै आपरै प्रतम सूं ई निरी ताळ वंतळ करतो। साथी–साईना बख लागतां ई चिड़ावता पण वो किणी री कीं गिनार ई नीं करतो। जाणै भाटा नै बतळायो हुवै। मन–मतै ई सिण–फिण मुळकतो रैवतो।

कमरां में माहोमाह घणकरी उणरी ई गांगरत चालती। सुणतां–सुणतां म्हारै पाखती खासी–भली चरपरी ख्यात जुड़ती गी। वो कांच में टग–टग भाळतो इण भांत आपरो उणियारो निरखतो जाणै कोई दूजो ई माणस हुवै। अर इण भांत निसंक वंतळ करतो जाणै किणी गाढा मिंत सूं सुरपुर करै।

अेकर फाटोड़ी चूंदड़ी रै घड़चै रंजी झाड़, कांच टेबल माथै धर्‌यो। सांम्ही कुरसी माथै बैठ, थोड़ी ताळ तांई आपरो प्रतम निहारतो रह्यो, जाणै ओळख में आंटी पजगी हुवै। पछै होठ मुळमुळाय पूछ्यो – अबकी तिमाई में फेल कीकर हुयो?

Scanned by CamScanner

मूंढो उतार होळै–सीक पडूत्तर दियो – म्हैं ऐकलो ई तो फेल नीं हुयो। क्लास में आधा सूं बेसी लड़का फेल हुया।

बो आंख्यां काढ़ आकरा सुर में फटकार बताई – दूजा पड़्या धेड़ में। थनै वारा सूं कांई वास्तो ! कांई तल्लो–मल्लो ! घर री वळी परवाण बैवणो चाइजै। थनै ठाह कोनी, घर में किती मेन पड़थोड़ी। धापनै रोटी नीं खाय माईत थनै भणावै। अर थिंआं रै की परवा ई नीं !

–म्हारा अगूणा दोरा आया।

–थारै ऐकला लारू ई दोरा आया ? दूजा लड़का पास कीकर हुया ?

–मायाकोड़ी तो घणी ई करूं। पण इम्तियान रै नांव अैड़ी धड़धड़ी छूटै कै आयै जको ई भूल जावूं।

–जोधाणै आय बातां तो खासी सीखग्यो। सावळ मन लगाय भणैला तो थूं ई सुख पावैला। कान खोल सुभट सुणलै, अबै कोई चूक करी तो थूं थारी जाणै।

–म्हैं म्हारी ई नीं जाणू तो दूजो कुण जाणैला ?

–ओळखाकड़ा री जीभ घणी बधगी दीसै ?

–वैन हुवै तो नापलो। आ ई मन में क्यूं राखो ?

–लपका करतो दबै कै जमावूं दो–च्यार झापा में।

पछै वो काठी मून धारली। घड़ी–घड़ी बतळायो तो ई नीं बोल्यो। ऐकर वो दो–तीन घड़ी दिन चढ़्यां मोड़ो उठ्यो तो उणनै जाणै जित्ती खारी लागी। आंचा–आंच में उजाळियां घाट ई काच मूंढागै धरनै दांत पीसतै बूझ्यो – रातै इत्तो मोड़ो क्यूं आयो ? अबस सिनेमा में उळलियो दीसै।

–थोड़ो–सो मोड़ो आवूं अर थांनै तो झट सिनेमा रो वैम हुवै।

–तो साच बता गियो कठै ?

तिलाड़ में सळ घाल थोड़ी ताळ उपरांत सोच–विचार नै बोल्यो – घोड़ां रै चौक मासीजी सूं मिंड्या रा मिलण ने गियो। म्हैं तो घणो ई नट्यो पण वै ब्याळू करयां टाळ आवण ई नीं दियो। पछै आडो हुवतां ई ऊंघ आयगी। जागतां ई सीधो बोरडिंग कानी न्हाटो। विसवास नीं हुवै तो...।

–थारै माथै नै वळै विसवास ! म्हैं सै बावड़ कर लिया। करणीदान अर रामबगस रै साथै सिंझां चार भुजा टाकीज पधारया। थनै कित्ती वळा समझायो कै आं लफंगां रो सांढो मत कर। पण थारै करै जद ! अर वळै म्हारै सांम्ही झूठ बोलटणी चावै। थूं कैवै तो वांनै तबक बुलाय पूछूं ?

आ बात सुणतां ई काच मांयली छिब रो लप मूंढो उतरग्यो। आंख्यां बुलबळतो अठी–उठी ताका–माका करण लागो। पछै दोनूं हाथां कान झालतो गिरणायो – कालै चूक–खामी हुयगी। अबै कदैई भूल नीं करूं। आज–आज माफी बगसाय दो।

–माफी बगसायां सूं थूं सांम्ही वत्तो इतरैला। ऐकर सावळ भारणी उतर जावै तो पछै केई दिनां तांई निरांत। निसड़ा रै लाज–सरम रो वास्तो ई नीं। गांव रो भाईपो दोखियां सूं ई भूंडो। वांरो बख लागै तो चोखळो छुडाय दै। घरवाळां री सै आस थारै माथै अटक्योड़ी। ज्यूं–त्यूं उकीलात पास करलै तो घरवाळां रा फोड़ा भरै पड़ै। नींतर घरवाळां री आस माथै बीजळी पड़ैला जको तो पड़ैला ई, पण थारी गत ई भूंडी बिगड़ैला। वा ई कस्सी, वो ई सूड़। वा ई झाड़बड़, वा ई कूतर। वो ई हळ, वै ई ऊमरा। वो ई तावड़ो, वो ई परसेवो। वै ई लूवां अर वा ई छान ! सावळ मन लगाय नीं भण्यो तो थारा कांटा थारै ई भागैला।

–म्हारा कांटा म्हारै नीं भागै तो कांई थारै भागैला ?

–म्हारै ! वो इचरज अर गताघम में अळूझ संका कीवी। पछै मीचरी आंख्यां काढ काच रै सांम्है जोयो। भलां इणमें थोबड़ो सुजावण री कांई बात ! भलाई री बात ई खारी लागै ! अै दिन तो कुदड़का मारता खिसक जावैला अर पछै पिछतायां की सांधो नीं लागै।

अरे ! काच में औ गधा रो मूंढो कीकर परगट हुयो ? लारै कोई गधो तो नीं ऊभो ! वो झिझक नै पाछल फोरी – कीं न कांई ! पछै सांम्हो–सांम्ह मूंढो करयां आपरो इज उणियारो सुभट दीस्यो। ठौड़–ठौड़ खीलां–ई–खीलां।

कुत्ता री गळाई अै कान इत्ता लांबा कीकर हुयग्या ? आंख्यां मींच पाछी खोलतो तो कान पाछा छोटा हुय जाता। कानां री लोळां घड़ी–घड़ी ताण खींचतो। चिट्टूड़ी आंगळी सूं ठेठी काढतो।

ऐकर देसी छातो पीयां मीचरी आंख्यां में ई रंग आयग्यो। काच भाळ्यो तो उणियारो असैंधो लखायो ! मीट गडाय बूझ्यो – थूं कुण है भाया ?

–म्हनै ई नीं ओळख्यो ?

–कदैई देख्यो होवूं तो ओळखूं !

–थारी अैड़ी मत कीकर बिगड़ी कै आपोआप नै ई नीं ओळखै। आ तो मौत सूं ई माड़ी बात है।

–माड़ी हुवो भलांई सिरै, पैला थारी पिछाण तो बता, थूं है कुण ? म्हारा दरपण में डेरो क्यूं जमायो ? थारो काळो मूंढो कर अठा सूं।

–म्हारो मूंढो काळो हुयां थारो कीकर बचैला। आछो हुयो रे बावळा, थनै इत्तो ई बेरो कोनी कै थूं है जको ई म्हैं हूं।

–म्हैं हूं जको ई थूं है ?

–हां !

–पछै म्हैं ओळख्यो क्यूं नीं ?

–वा तो थूं जाणै। कदास दारू पीयां आंख्यां री तासीर बदळगी दीसै।

–कांई थूं वळै दारू पीयो ?

–म्हैं नी पीयो, थूं पीयो।

तठा उपरान्त दोनूं हाथां माथो झाल वो थोड़ी ताळ गिड़ा री गळाई अवचळ बैठो रह्यो। पछै नीठ हीमत करनै टमकारती आंख्यां काच सांम्ही जोयो। माथै अै दो सींगड़ा हुवै ज्यूं कांई ऊगोड़ा ? देखणी चावै तो ई नीं देखीजै। कुरसी छिटकाय भचकै ऊभो हुयो। हाथां लुकायोड़ो बंडळ अर आगपेटी लेय पाछो उणी भांत कुरसी माथै बैठग्यो। ऊंधी बीड़ी लगाय, लगता ई तीन–च्यारेक कस खींच्या। धुंआ रा गोट सूं काच रो पाणी धूंधळो पड़ग्यो। अबकी काच में बकरा रो मूंढो निगै आयो। लटकता कान। माथै दो तीखा–तच्च सींगड़ा। कठैई काच री रंगत तो नीं बदळगी ! वो जूंझळ खाय मांचा माथै आडो हुयग्यो।

पछै खासा दिनां लग वो काच में आपरो मूंढो नीं जोयो। तो ई हवा अर तावड़े रै झीणै पड़दै उणनै आपरो प्रतम दीखण रो भरम हुवतो। वो आपरी काळूंटी छींयां सूं ई आंतरै....आंतरै भाजणी चावतो। पण छींयां ही कै उणरो सांढो ई नीं छोडती। उणनै आपरी छींया सूं ई डर लागण लागो। जबर भूंडी गत बिगड़ी।

अेकर रीस में भळभट्ट हुय वो कमरा रो ताळो खोल्यो। ठोकर सूं फड़को उघाड़, बस्तो मांचा माथै पटक दियो। काच सूधो करनै सांम्हो–सांम्ह कुरसी माथै जमग्यो। काच माथै रंजी–ई–रंजी झिल्योड़ी ही। रंजी मांय सूं अणछक अेक उणियारो उघड़्यो। उण माथै मीट पड़तां ई वो कैवण लागो – आजकालै पिंडा छोरयां लारै रांचण लागा ? अबै तो साव पांखी परवारगी ! हुवै जकी बात म्हनै सुभट बता, नींतर आज थारी बातां है।

–थारी–म्हारी बातां तो भेळीज है।

–आं थोथी आडियां सूं अबै नीं भरमीजूं। ओटाळ, थारा अै लखण तो नीं जाण्या हा ! सुभट पडूत्तर दे कै थूं सड़कां चालती छोरयां रै लारै चोड़ै–धाड़ै रांचै कै नीं ?

–राज री सड़क म्हारै अेकला रै ई पट्टै कोनी। घणा ई मिनख अठी–उठी चालता रैवै। म्हैं किण–किण रो ध्यान राखूं।

–थूं खास ध्यान राखनै लारो करयो, जद इज तो म्हनै थारै माथै इत्ती चंडाळी छूटी। पैला तो म्हैं कदैई थनै अैड़ो ओळबो नीं दियो। लाज–बायरा, थूं आ नवी विद्या कद सीखी ? घरवाळा कांई भरोसो करनै थनै भणावण खातर भेज्यो अर थूं अै छापा उघाड़्या ! अधबेरड़ा, थूं वळै म्हनै मूंढो बतावै ?

–जे म्हारा मूंढा सूं थांनै अैड़ी ई ओक्या है तो थें मूंढो जोवो ई क्यूं ? म्हैं डरतो सांम्ही ई नीं धकणी चावूं। पण थे नीं मानो जिणरो तो म्हैं कांई करूं ?

–वळै लपर–चपर करै ! अबैई लखण पाछा नीं सांवट्या तो जीभ खांच लूंला।

आ फटकार सुणाय वो रीस में होठ चाबण लागो। पछै दो–तीन वळा जोर सूं झाटकनै आखी रंजी झाड़ी। काच मांयलो उणियारो तो सांम्ही उण माथै ई आंख्यां काढण लागो। चोरी अर सीनाजोरी आज ई परतख आंख्यां दीठी।

–थोड़ी–घणी ई लाज हुवै तो ढकणी में नाक डुबोय मरजा। घरवाळा तो राबड़ी खाय टंक टाळै। पेट रै गांठां देय थारै घी भेजै। पडूदी रा लाडू सांधै। वांरै सपनां सागै विसवास–घात कर, थूं छोरयां लारै रांचतो फिरै। बोल, पछै लाज–सरम किण दिन सारू हुवै ?

–म्हारा ई तो कीं सपना हुवैला। सपना किणी री लाज–सरम नीं पाळै !

–थारै वळै कैड़ा–कांई सपना है ?

–सपना जैड़ा सपना। म्हारी ऊमर अर जमाना परवाण सपना !

–पछै घरवाळां रै सपना रो कांई दीन हुवैला ?

–घरवाळा जाणै।

–थूं कीं नीं जाणै ?

–आं हां, म्हैं तो आपरै सपनां टाळ दूजी कीं बात नीं जाणू।

–चंडाळ, थूं इत्ती बातां कद सीखग्यो ?

–अै बातां तो आपै ई सीखीजै।

आ बात सुणतां ई उणनै तरणाटी आयगी। तड़ातड़ पांच–सातेक लपड़ां मेली। गाल राता–लाल हुयग्या। आंख्यां जळजळी हुयगी। धकै उणियारो निरखण री हीमत नीं हुई। थोड़ी ताळ मूंढो ढेरयां बैठो रह्यो। पछै घांटी पाधरी करनै मीचरी आंख्यां मन–माडै काच सांम्ही जोयो। गालां री रातोड़ हाल मिटी नीं ही। तीन–च्यारेक खीलां फूटगी ही। सेवट हीमत हारतो छेहली धमकी दीवी – अबै कदई छोरयां लारै रांचतो निगै आयो तो घांटी मरोड़ नाखूंला।

कीं पडूत्तर नीं मिळ्यो।

आंख्यां गडाय वो अेकटक आपरै प्रतम सांम्ही तठा लग देखतो रह्यो कै जठा लग दरपण मांयली छिब होळै–होळै लोप नीं हुयगी।

कै अचाणचक वो झिझकनै ऊभो हुयो। बकाई खावतो बरकण दूको – आ कैड़ी अजोगती बात हुई ? कांच रै मांय म्हनै आपरो उणियारो ई नीं दीसै।

पछै वो सितंगिया रै उनमान दौड़तो–दौड़तो बोरडिंग रै बारै गियौ। कंदोई री दुकान सूं अेक दई–थड़ी अर अेक लाडू लायो।

पाछो कुरसी माथै बैठ काच में देख्यो तो उणियारो सुभट निगै आयो। गालां री रातोड़ खासी कम पड़गी ही।

–अबै रूसणो फिटो कर। ले आ मिठाई खायलै। थारै खातर ई लायो।

–नीं खावूं। म्हनै कूट्यो क्यूं ?

–हाल कांई हुयो, बोछरड़ायां करैला तो वळै कूटूंला। घणो–घणो जंतरावूंला

Scanned by CamScanner

—पछै औ थोथो लाड क्यूं ? हाथ नीं थाकै जित्तै कूट्यां जावो।

—ले खायलै। घणो वाद मत कर। नींतर वळै भांगूलां।

काच मांयलो प्रतम थोबड़ो सुजाय बोल्यो — मरयां ई नीं खावूं। थारी इंच्छा हुवै ज्यूं कर।

—अरे, मूरखां रा पातसा, म्हैं तो थारी भलाई खातर इत्तो धयो करूं।

—थारो—म्हारो भलो किसो न्यारो है ?

—कांई थूं म्हारा सूं न्यारो कोनी ?

—आं हां, अपां दोनूं तो अेक ई हां। फगत औ दरपण रांझा रो मूळ है।

—म्हारा कह्यो मान। थनै राजी करण सारू आ मिठाई लायो। खायलै।

—पैला इण काच री किळी—किळी बिखेर बारै वगावै तो म्हनै पतियारो हुवै। पछै थारो कह्यो कदैई नीं टाळूं।

—वचन देवै ?

—हां, वचन देवूं।

तठा उपरांत राम जाणै उणरै कांई जची कै गाभा धोवण री मोगरी सूं वो उण काच रा टुकड़ा—टुकड़ा कर नांख्या। गळियारै रा बगदा में फेंक्या टाळ नेहचो नीं हुयो। पछै कोड सूं मिठाई खाई तो दूणी सस्वादी लागी। अर वो दिन अर वा घड़ी कै जद—जद मिठाई खावण रो तंत सजतो वो कदैई आळिया—टोळिया नीं करया। उण दिन सूं ई माहोमाह दोनां रै बिचाळै अेक अैड़ो ई नेगम राजीनांवो हुयग्यो। अर आज उण राजीनांवा रै परताप अेक नाकुछ थाणैदार हुवता थकांई लोग—बाग उणरै पाखती पांच लाख रिपियां रो नकदी कूंतै !

❖ ❖ ❖

कूंपळ

सवाईसिंह शेखावत

अे बाई, सुण जियांई खुर बारै आवै, तूं म्हनै बोल दीजै। बापू कह्यो अर आपरी गुड़गुड़ी लेय र पोळ कानी टुरग्यो।

दाखां अेकर पोळ सूं निकळता बापू री पीठ तकी, पछै उडती—सी निजरां गाय कानी झांक धम्म देणी—सी पीढै माथै बैठगी। घणी जेज सूं ऊभां—ऊभां बींरी टांगां दूखण लागी ही।

गाय बुरी तरीकै छटपटावै ही। कदै बैठ। कदै ऊठै। बींनै चैन नीं पड़ै। बा बराबर ठाण में चक्कर काटै। डगमग कांपती टांगां सूं लड़खड़ा र बैठण री जुगत करै, पण तद ई दरद रो तीखो हिलोरो बींनै बुरी भांत तड़फाड़ाय जावै अर बा फेरूं ठाण में चक्कर लगाबा लाग जावै। गाय अेक ठौड़ टिक नीं पावै। पीड़ स्यात बेसी ई हुवण लागगी ही।

दाखां फेरूं अेकर गाय कानी देख्यो। गाय ठाण में पसर र बैठी ही। गौर सूं देख्यां इयां लागै जाणै बींरै हूंकणी लाग रही हुवै। ऊपर—नीचै हुवतो पेट। हळवै—हळवै धूजतो आखो डील। आंख्यां झांकती तीखी पीड़।

चाणचक गाय आगलै पगां जोर देयर उठण री जुगत करी पण लारला पग संभळ कोनी सक्या। बींरो डील धूज र धड़ाम सूं भींत में जाय र बाज्यो....डांऽऽ !

दाखां बेगी—सीक लपक र गाय रै नैड़ै गई। ठाह नी गाय रै सांचोसांच ई लागी ही। डावो पसवाड़ो तेज रगड़क सूं छुलग्यो। लाल खून रिसकै हो। रगड़क सूं छुल्या पसवाड़ा नै देखतां पाण दाखां गुमसुम—सी ऊभी रैयगी। मन कियां—कियां हुवण लाग्यो। बा पाछी आय र पीढै माथै बैठगी।

पोळ सूं बारै दोय आदमी बतळावै हा। बांरी बतळावण बापू री गुड़गुड़ी रै सहारै डूबै—उतरावै ही। पोळ कानी कान लगा र दाखां घणी जुगत करी कै दूजो आदमी कुण है अर बात किणरै बाबत है पण साफ कीं नीं पल्लै पड़्यो। हुवै कोई, म्हनैं कांई ! बा हार र मन में कह्यो। गाय अब तांई ठाण में चक्कर लगावै ही। बींनै पल—घड़ी रो ई चैन नीं। सारो ठाण गाय रै खुरां सूं खूंदीज र ओपरो—ओपरो लागै हो।

Scanned by CamScanner

–मां हुवती तो बींनै क्यूं बैठणो पड़तो। मां मतैई स्सो कीं संभाळ लेवती। दाखां आपरै मन में विचार करै – मां हुवती तो बा खुलैखाळां कह देवती कै देख मावड़ी और क्यूं ई कराय सकै पण आपां सूं औ दरसाव नीं देख्यो जावै। निजरां फेरूं गाय कानी गई। गाय सूनी–सूनी अर निढाळ–सी बैठी ही। बा घणी उदास निजर आवै ही। डील री रूंआळी छितरी–छितरी अर रंग काळो–स्याह पड़ग्यो हो।

–देख, तूं आज घास री टाळ कर दै। गाय आज ढीली–ढीली लागै है। स्यात आज ई ब्यावै। मां नै घास तांई जावती देखर र बापू कह्यो हो। पण बा किणरी मानै। फेरूं ई नीं ठैरी। दाखां रै मन मां तांई रीस रो अेक हिलकोरो ऊठ्यो नीं – जे आज जावती तो कांई बिगड़ जावतो ?

गाय ठाण रै बींचूबीच ऊभी हुय र लारलै पगां झुकी। थोड़ो–सो पोठो कह्यो। पण पोठौ तळै पड़ै इणसूं पैला ई बा तड़फ र दूजै कानी गई परी। बींरी लारली टांगां गोबर सूं सड़गी। खिणेक ढब र गाय ठाण नै सूंघ्यो, पछै अेक चक्कर लगा र फटाक देणी–सी बैठगी। मूंढ़ो धरती माथै टेक र बा जोर–जोर सूं सांसां छोडै। आंख्यां दरद सूं फाटी पड़ै। लारलै हिस्से में अेक धोळो–धोळो फूंकलो–सो चिळक्यो। दाखां जोर सूं बापू नै हेलो पाड़बाळी ही कै गाय झप देणी ऊभी हुय र भींत कानी गई परी। गाय री तळमछ अर निमळी हालत देख र बींरी आंख्यां में आंसू आयग्या। ठाह नीं क्यूं, बींनै इयां लागै जाणै औ स्सो कीं गाय रै नीं हुय र बींरै आपरै सागै हुवतो हुवै।

धग–धग धूजती देही अर इतरी पीड़ ! अेक जीव रै जलम सूं मायड़ इतरी दुखी हुवै। च्च–च्च–च्च.....दुनिया सांच ई कैवै कै बांझड़ी कांई जाणै जापै री पीड़। बींरै चेतै खयाल आयो, लुगायां रै ई जद टाबर हुवतो हुवैला तद बै ई इतरो ई दुख पावती हुवैली। अर हां, पारां जिकै दिन कैवै ही कै इण खातर ई ब्याह हुवै।

बींरी आंख्या आगै अतीत डोलग्यो। पर री तो बात है। सूंदरपरा रा धनजी चौधरी आया हा। बींरै ई ब्याह रो जिकर हो। बा ओसारै री भींत री ओट हुय र स्सो कीं सुणै ही। बापू चौधरी री बात मान ली ही। बियां हांकारो तो मां ई भर दियो पण बा कह्यो कै और स्सो कीं तो ठीक है पण म्हैं छोरो आंख्यां सूं देखणो चावूं। म्हारी चांद–सी बेटी तांई छैल–गबरू जवान हुवणो चाइजै। दाखां लाजां मरती भाग र कोठै में बड़गी। गुलाबी लाज ओढ्यां बा ठाह नीं कितरी जेज काच में आपरो मूंढो देखती रही।

–डांऽऽ ! दाखां रै अेक झटको–सो लाग्यो। धरती माथै पड़ी गाय पगां रा फटकारा मारती डांऽऽ–डांऽ करै ही।

–बापू ! जोर सूं हेलो मार्‌यो। गाय बुरी तरह छटपटावै ही। बापू लपक र भीतर आयो। हाथ री गुड़गुड़ी अेक्कानी गेर बो गाय रो पेट सहलावण लाग्यो।

गाय अजै ई पग पीट–पीट र जोर–जोर सूं डांऽ–डांऽ करै ही। गाय री हालत देख र बींरी आंख्यां में आंसू आयग्या।

चाणचकां बींनै खयाल आयो – ओ......ह.....तो ब्याह रै पछै बींरी आपरी आई हालत हुवैला। बा अेकरसी जोर सूं कांपगी। यूं लाग्यो जाणै अबार ई रोवण ढूकैला। नीं–नीं बापू, तूं म्हारो ब्याह मत करजै। हे भगवान, म्हैं तो मर ई जावूंली।

गाय धरती माथै पसरी पड़ी ही। लांबी जीभ बारै निकळ्योड़ी ही। नकतोड़ै झाक चिलकै हा। आंख्यां फाटी–फाटी–सी लागै ही। आखो डील थर–थर धूजै हो। खुर बारै आयग्या हा। बापू हाथां सूं पकड़ र खींचण री जुगत करै हो। गाय अेकर जोर सूं रांभी। ऊठण री कोशिश करी, पण थोड़ी–सी ऊठ र हेटै जाय पड़ी। दाखां हाथां सूं आपरी आंख्यां मींचली – हे भगवान, म्हैं तो मर जावूंली पण ब्याह नीं करावूं।

बापू उतावळो हुय र खुर खींचै हो। गाय रो डील मुरदै री भांत अवस–सो पड्यो हो। आंख्यां री काळी टिकड़ी बारै निकळबाळी–सी लागै ही। लारलो हिस्सो जोर सूं हालै हो। गांय अेकर फेरूं रांभी–डांऽऽ ! आगलै ई खिण खून अर जेर सूं लिथड़्यो अेक लोथड़ो धरती माथै आय पड्यो। दाखां घृणा भाव सूं पच्चदेणी थूक र दूजै कानी गई परी।

गाय ऊभी हुय र तेजी सूं हूंकारा भरती खून अर जेर सूं सड़ी बीं लोथ नै चाटबा लागगी। बापू घणी जेज बींरी सफाई–सी करतो रह्यो। फेर हाथां रै माटी रगड़तो कैवण लाग्यो–बाई, देखै कांई है। जा, पाणी ला। टोगड़्या नै तेल देवणो है। बींरै मूंढै अेक संतोख भी मुळक ही।

दिन चढ़तां–चढ़तां टोगड़ियो खड़ो हुवण री कोशिश करण लाग्यो। आ न्यारी बात ही कै बो जद–जद जाय ई पड़ैं। पण फेरूं ऊठै। उछाळा भरै। भक्ख ऊजळो रंग – सोवण–ऊजळा खिरगोस रा बचियां जैड़ो। बुगलै री पांखां–सा छोटा–छोटा कानड़ा। प्यारो मूंढो। काळी टिकड़ी–सी नैनी–नैनी आंख्यां। वो घणो फूटरो लागै। गाय हरख–हरख र बींरो डील चाटै। हूंकारा भरै। मुळकती आंख्यां अर पुळकतै मन दाखां मेथी–बाजरो रांधै।

दाखां री आंख्यां फेरूं अेक नवो–निराळो चितराम ऊग्यो। बींरै सासरै रो आंगणो। नीमड़ी री छींया। पीढै माथै बैठ र बा अेक सोवणै टाबर रा लाड–कोड करै।

दाखां मुळक र गाय कानी देख्यो। गाय अजै ई टोगड़ियै नै चाटै ही। अर टोगड़ियो आपरी थूथणी नै गाय रै थणा में रगड़ै हो।

दाखां रै रूंग–रूंग में अेक मीठी मुळक रंगरेळ करै। चाणचक बींरै मन में आई कै बा मां नै जाय र पूछै – मावड़ी तूं म्हारो ब्याह कद करसी ?

❖ ❖ ❖

Scanned by CamScanner